1. बीरबहूटी PART 1 (बीरबहूटियों को खोजना) (बादल बहुत बरस लिए थे । ---- स्टेशनरी की दुकानवाले ड्रॉपर से पैन में स्याही भरते थे ।)

1. पटकथा (बीरबहूटियों को खोजना)

स्थान – कस्बे से सटा खेत ।

समय – सुबह 9 बजे ।

पात्र - 1. बेला, करीब 11 साल की लडकी, स्कूल यूनीफॉर्म पहनी है, पीठ पर बस्ता है । चेहरे पर खुशी है ।
2. साहिल, करीब 11 साल का लडका, स्कूल यूनीफॉर्म पहना है, पीठ पर बस्ता है । चेहरे पर खुशी है ।

दृश्य का विवरण – दोनों बच्चे, स्कूल में जाते समय कस्बे से सटे खेतों में बीरबहूटियों को खोजने आए हैं ।

संवाद -

बेला – देखो साहिल, यहाँ कितनी बीरबहूटियाँ हैं !

साहिल – हाँ, मैंने देखा । इसका रंग तुम्हारे रिबन के जैसा लाल है ।

बेला - ठीक है । ये कितने सुर्ख, मुलायम और गदबदी हैं ! धरती पर चलती फिरती खून की बूँदें जैसी ... ।

साहिल – तुमने कुछ सुना बेला ?

बेला - हाँ सुना, स्कूल में पहली घंटी लग गई है । तो हम जाएँ, बहुत देर लगी है ।

साहिल – लेकिन मुझे दुकान से पैन में स्याही भी भरवानी है ।

बेला - तू क्या बोलता है यार ? देर होकर कहीं माटसाब के आगे हो जाए तो ?

साहिल – नहीं बेला, स्कूल के नज़दीक के दूकान से ही भरवानी है ।

बेला - ठीक है साहिल । तो जल्दी चलें ।

(खेत की ज़मीन से उठकर दोनों बस्ते और वर्दी ठीक करके दुकान की ओर जाने लगते हैं ।)

PART 2 (पैन में स्याही भरवाने दुकान जाना) (पैन में कुछ स्याही बची थी ...... पानी पीने चला जाऊँ ? ")

1. ' बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना चाहिए ' - दुकानदार ने ऐसा क्यों कहा ?

साहिल ने पैन में नई स्याही भरवाने की इच्छा से उसमें बची स्याही को जमीन पर छिडक दिया । दुकान पहुँचने पर वहाँ स्याही नहीं थी । तब दुकानदार ने साहिल से ऐसा कहा । कहने का मतलब है, किसी वस्तु को मिलने की प्रतीक्षा में हमारे पास के वस्तु को छोडना मूर्खता है । बिना सोच विचार करके कुछ नहीं करना चाहिए ।

2. पटकथा - (पैन में स्याही भरवाने दूकान में)

स्थान - गाँव की स्टेशनरी की दुकान ।

समय - सुबह 10 बजे ।

पात्र - 1. बेला, करीब 11 साल की लडकी, स्कूल यूनीफॉर्म पहनी है, पीठ पर बस्ता है ।
2. साहिल, करीब 11 साल का लडका, स्कूल यूनीफॉर्म पहना है, पीठ पर बस्ता है ।
3. दुकानदार, करीब 50 साल के आदमी, धोती और कुर्ता पहने हैं ।

दृश्य का विवरण - बेला और साहिल पैन में स्याही भरवाने केलिए दुकान के पास खडे हैं ।

संवाद -

दुकानदार - अरे बच्चे, क्या चाहिए ?

बेला - भैया, एक पैन स्याही भर दो ।

दुकानदार - अरे, स्याही की बोतल अभी-अभी खाली गई है । अब तो कल ही मिल पाएगी ।

साहिल - बाप रे ! अब मैं क्या करूँ ?

दुकानदार - पैन में थोडी भी स्याही नहीं है ।

बेला - नहीं भैया । पैन में थोडी स्याही थी । इसने तो उसे ज़मीन पर छिडक दिया ।

दुकानदार - (हँसते हुए) अरे बच्चो, बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना चाहिए ।

साहिल - हाँ गलती हुई ।

दुकानदार - कौन - सी कक्षा में पढते हो ?

साहिल - (बुरे मन से) पाँचवीं में ।

दुकानदार - दोनों ?

बेला - (खुशी से) हाँ, हम दोनों एक ही सेक्शन में पढते हैं । स्कूल का समय हो गया अंकिल, हम चलते हैं ।

दुकानदार - अच्छा । तो कल आओ बच्चो, स्याही ज़रूर मिलेगी ।

बेला - ठीक है भैया ।

(दोनों बच्चे निराश होकर दुकान से बाहर आते हैं ।)

3. टिप्पणी – सच्ची दोस्ती

जीवन में दोस्ती का स्थान महत्वपूर्ण है । दो व्यक्तियों के बीच का आत्मसंबंध दोस्ती का आधार है । एक कहावत है यदि आपका मित्र अच्छा है तो आपको दर्पण की कोई आवश्यकता नहीं है । दोस्तों को चुनते समय हमें बहुत सतर्क रहना चाहिए । क्योंकि कुछ लोगों की मित्रता सच्ची नहीं होती । असली दोस्ती में एक दूसरे को पूर्ण रूप से जानता है, अपनी बातें बिना कोई हिचक से दूसरे से बाँटते हैं । सच्चा मित्र मिलना बडे सौभाग्य की बात होती है । सच्चा मित्र किसी भी आपत्ति में अपने मित्र को छोडकर नहीं जाता । वे सुख में हो या दुख में साथ रहते हैं । सच्ची मित्रता में जाति, धर्म आदि किसी भी भेदभाव की भावना नहीं होती । सच्चे मित्रों से अलग होना बहुत दुखदायक होता है । समाज में जीने केलिए अच्छी दोस्ती बहुत सहायक होता है ।

4. टिप्पणी – साहिल और बेला की दोस्ती

साहिल और बेला प्रभात की कहानी बीरबहूटी के मुख्य पात्र हैं । वे दोनों फुलेरा गाँव के स्कूल में पाँचवीं कक्षा में पढनेवाले छात्र हैं । वे एक साथ स्कूल आते-जाते हैं । बीरबहूटियों को खोजने केलिए और खेलने केलिए एक साथ निकलते हैं । दोनों एक ही क्लास में पढते हैं, एक ही बेंच पर पास-पास बैठते हैं । कक्षा में साहिल जो करता है वही बेला भी करती है । एक साथ कॉपी लिखते हैं । किताब पढते तो दोनों किताब पढते, पाठ भी एक ही पढते । एक साथ पानी पीने चले जाते हैं । वे पास-पास रहते हैं । दोनों अच्छे दोस्त हैं । एक का दुख दूसरे का भी है । सुरेंदर जी माटसाब बेला के बालों में पंजा फँसाने पर साहिल दुखी हो जाता है । छत से गिरकर बेला के सिर पर चोट लगने पर भी । साहिल की पिंडली में कील लग जाने पर बेला भी बहुत दुखी हो जाती है । पाँचवीं का रिज़ल्ट आया तो छठी कक्षा में दोनों अलग-अलग स्कूलों में पढने जाने की बात सोचकर बेला को रुलाई आई तो साहिल की आँखें भी लाल हो गईं । दोनों आपस में सांत्वना देते हैं । इस प्रकार दोनों की अनुपम दोस्ती हम देख सकते हैं ।

5. बेला की चरित्रगत विशेषताओं पर टिप्पणी

हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक प्रभात की सुंदर कहानी बीरबहूटी का मुख्य पात्र है बेला नामक ग्यारह साल की लडकी । वह फुलेरा गाँव के स्कूल में पाँचवीं कक्षा में पढती है । उसका दोस्त है साहिल । दोनों अच्छे दोस्त हैं, वे एक दूसरे से बहुत प्यार करते हैं । दोनों एक ही कक्षा में पढते थे । साथ-साथ स्कूल आते-जाते हैं, रास्ते के खेत में बीरबहूटियों को खोजते हैं और खेल घंटी में गाँधी चौक में लंगडी टांग खेलते हैं । बाकी छात्रों के नज़र में बेला एक अच्छी लडकी है । एक दिन गणित के माटसाब ने कॉपी जाँचते समय उसमें गलती पाकर उसका अपमान करते तो वह बहुत उदास हो जाती है । पाँचवीं के रिज़ल्ट आने पर अगले साल बिछुड जाने के बात को लेकर दोनों दुखी हो जाते हैं । बेला में हम एक सरस स्वभाववाली, मित्रता निभानेवाली, स्वाभिमानी लडकी को देख सकते हैं ।

PART 3 (बेला के साथ सुरेंदर माटसाब का बुरा व्यवहार) (गणित के माटसाब ---------- नज़र नहीं मिला पाई ।)

1. ' गणित के माटसाब छात्रों को ज़रा-सी गलती पर इधर- उधर फेंक देते थे ।' - उसपर अपना विचार लिखें ।

   छात्रों से अगर कोई गलती हुई तो प्यार भरी बातें कहकर उन्हें सुधारना चाहिए । गलती सुधारने में गुस्सा करना कभी ठीक नहीं है । ऐसा करने पर उस अध्यापक के प्रति हमेशा उनके मन में भय रहेगा । यह एक अच्छे अध्यापक केलिए लायक नहीं । शरारती बच्चों को भी प्यार भरी व्यवहार करके बदलना चाहिए ।

2. जब वह उसके पास आकर बैठी उससे नज़र नहीं मिला पाई । क्यों ?

   बेला जानती थी अपनी दिल दोस्त साहिल की नज़र में वह बहुत अच्छी लडकी है । उसके सामने बेला अपमानित होना नहीं चाहती थी । लेकिन माटसाब का व्यवहार साहिल की उपस्थिति में थी । इस कारण उसे शरम आया । इसलिए बेला साहिल के पास आकर बैठी उससे नज़र नहीं मिला पाई ।

3. बेला की डायरी - गणित के माटसाब से हुए बुरे व्यवहार के बारे में

तारीख : …………………..

आज मुझे बहुत दुख का दिन था । गणित के माटसाब सुरेंदर जी मेरी कॉपी जाँचते वक्त उसमें गलती पाकर उन्होंने मेरे बालों मे पंजा फँसाया । लेकिन वह गलती न होने पर उन्होंने मुझे छोड दिया । मैं बहुत डर गयी थी । मेरे हाथ पैर काँप रहे थे । मुझे भयभीत होते देखकर साहिल भी बुरी तरह डर गया । माटसाब ने कॉपी मेरे बैठने की जगह पर फेंककर मुझे वहाँ जाकर बैठने को कहा । मुझे बहुत शरम आया । इसलिए मैं साहिल से नजर नहीं मिला पाई । क्या करूँ ? अगर कॉपी में गलती होती तो मेरी क्या हालत होती ? सोच भी नहीं सकती । घर पहुँचने पर भी मेरा मन दुख से भरा था । आज का यह बुरा दिन मैं जिंदगी भर याद रखूँगी ।

4. वार्तालाप – साहिल और बेला (माटसाब का व्यवहार)

साहिल - बेला, तुम अभी दुखी है क्या ?
बेला - फिर मैं क्या करूँ ?
साहिल - अरे, तुम जानती हो न माटसाब ऐसा ही हैं ।
बेला - मैंने कोई गलती नहीं की थी । फिर भी उन्होंने मेरे बालों में पंजा फँसाया ।
साहिल - हाँ, वे भी जानते थे । इसलिए तुम्हें छोड दिया ।
बेला - मैं सचमुच डर गई थी ।
साहिल - हाँ, मैं भी डर गया था ।
बेला - मेरे पाँव काँप रहे थे । मुझे लगा कि मैं गिर जाऊँगी ।
साहिल - मुझे भी एसा लगा ।
बेला - मैं बहुत लज्जित हूँ … सबको मुँह कैसे दिखाउँ ? अकारण मुझे पीटने केलिए वे एक सोरी तो बोल सकते थे … पर ।
साहिल - तुम इस घटना को भूलो ।
बेला - पर … मैं दुख सह न पाती । घर जाकर माँ से यह बात ज़रूर बताऊँगी ।
साहिल - ज़रूर बताना । अब खुशी से घर जाओ ।
बेला - ठीक है साहिल, मैं कोशिश करूँगी ।

SREENATH KOVOOR VARKALA SOKHS

PART 4 (दीपावली के बाद स्कूल खुलना, गाँधी चौक में लंगडी टाँग खेलना)

(दीपावली की छुट्टियों के बाद जब स्कूल खुला तो --------------- और समय से कुछ अधिक मुस्करा रही हो ।)

1. साहिल के परेशान होने का कारण क्या था ?

दीपावली की छुट्टियों के बाद स्कूल खुला तो बेला के सिर पर पट्टी बाँधी थी । कोई उसे सफेद पट्टी कह रहा था तो कोई सुल्ताना डाकू तो कोई कुछ और कहकर चिढा रहा था । बेला की यह हालत देखकर साहिल परेशान हो गया ।

2. ' इन बच्चों को अपने चारों ओर खेलते देखकर गाँधीजी की मूर्ति ऐसी दिखाई पडती जैसे और सयय से कुछ अधिक मुस्करा रही हो ।'-इसका मतलब क्या है ?

गाँधीजी बच्चों को बहुत प्यार करते थे । इसलिए बच्चे जब निष्कलंकता और प्यार भरी दोस्ती के साथ अपनी मूर्ति की चारों ओर खेलने लगे तो उसे अधिक प्रसन्नता हुई होगी ।

3. पटकथा - 4 (गाँधी चौक के लंगडी टाँग खेल)

स्थान – स्कूल का मैदान ।

समय – सुबह 10 बजे ।

पात्र - 1. बेला, करीब 11 साल की लडकी, स्कूल यूनीफॉर्म पहनी है ।
2. साहिल, करीब 11 साल का लडका, स्कूल यूनीफॉर्म पहना है ।

दृश्य का विवरण - दीपावली के बाद स्कूल खुला तो बेला के सिर पर सफेद पट्टी बाँधी थी । यह देखकर साहिल उसकेपास आता है ।

संवाद -

साहिल - (परेशान होकर) तेरे सिर पर यह क्या हो गया बेला ?
बेला - (हँसकर) छत से गिरकर चोट लग गयी ।
साहिल - यह कब हुआ ?
बेला - बहुत दिन हो गए ।
साहिल - अब दर्द है क्या ?
बेला - नहीं । आज खेल घंटी में हम गाँधी चौक में लंगडी टाँग खेलेंगे ।
साहिल - नहीं खेलेंगे । तेरे सिर में फिर से चोट लग जाएगी तो ...?
बेला - (ज़िद करते हुए) नहीं लगेगी ।
साहिल - तो ठीक है । अपनी मर्ज़ी ।
(दोनों खुशी से कक्षा में जाकर बैठते हैं ।)

PART 5 (रविवार, साहिल पिंडली में चोट लगने से अस्पताल में) (रविवार का दिन था । ------ ये दोनों कहीं पर भी साथ ही दिखाई देते ।)

1. वार्तालाप (अस्पताल में, साहिल और बेला के बीच)

साहिल - हाय बेला, यहाँ क्यों आई हो ?
बेला - हाय साहिल, मैं तो सिर पर पट्टी बँधवाने आई है । क्या हुआ तुमको ?
साहिल – मेरी पिंडली में चोट लग गई है ।
बेला - कैसे ?
साहिल – स्टूल पर चढकर नीम की डाली पकडकर झूलते वक्त स्टूल टूटने से एक कील मेरी पिंडली में लग गई ।
बेला - डॉक्टर ने क्या कहा ?
साहिल – उन्होंने कहा घबराने की कोई बात नहीं । कुछ दिनों के बाद पट्टी खोलेंगे ।
बेला - दर्द ज़्यादा है क्या ?
साहिल – अब दर्द कुछ कम हुआ है ।
बेला - अच्छा मैं जाती हूँ, नर्स बुला रही है । बाई ।
साहिल – ठीक है बेला, बाई ।

PART 6 (पाँचवीं कक्षा का रिज़ल्ट आना, दोनों की बिछुडाई) (पाँचवीं कक्षा का रिज़ल्ट आ गया । ---- " नहीं। तुम्हारा रिपोर्ट कार्ड दिखाना ।")

1. साहिल और बेला को दूसरे स्कूल क्यों जाना पडता है ?

साहिल और बेला फुलेरा के जिस स्कूल में पढते हैं वह पाँचवीं तक का है । इसलिए पाँचवीं पास हुए साहिल और बेला को आगे की पढाई केलिए दूसरे स्कूल में जाना पडता है ।

2. बेला की डायरी (रिज़ल्ट दिवस की)

तारीख : ....

आज पाँचवीं कक्षा के रिज़ल्ट का दिन था । मैं और साहिल पास हो गए । मैं बहुत खुश हूँ ... साथ–साथ दुखी भी । क्योंकि मैं कल से साहिल से मिल नहीं पाएगी । अगले साल वह अजमेर जाएगा । उसे घर से दूर एक होस्टल में अकेला रहकर पढना पडेगा । आज तक कितनी खुशी थी । बारिश के मौसम में साहिल के साथ बीरबहूटियों को खोजकर कितने बिताए । कल से किसके साथ लंगडी टाँग खेलूँ ? जाते समय उसकी आँखें लाल थीं और उसमें पानी भर गया था । मेरा विश्वास है कि वह भी दुखी है । क्योंकि हमारी दोस्ती उतनी सख्त थी ।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SORIUS

3. पटकथा (पाँचवीं कक्षा के रिज़ल्ट आने पर)

स्थान - फुलेरा कस्बे की एक गली ।
समय - सुबह 11 बजे ।
पात्र - 1. बेला, करीब 11 साल की लडकी, फ्रॉक पहनी है ।
2. साहिल, करीब 11 साल का लडका, कुर्ता और पतलून पहना है ।
दृश्य का विवरण - दोनों पाँचवीं कक्षा के रिज़ल्ट जानने के बाद दुखी मन से गली की एक पेड के नीचे खडे हैं ।

संवाद -

साहिल - तुमने हमारा रिज़ल्ट देखा ?
बेला - हाँ देखा, हम दोनों छठी में आ गए हैं ।
साहिल - अगले साल तुम कहाँ पढोगी ?
बेला - राजकीय कन्या पाठशाला में । और तुम ?
साहिल - मुझे अगले साल अजमेर भेज देंगे । वहाँ एक होस्टल में अकेला रहकर पढना पडेगा ।
बेला - क्यों साहिल ?
साहिल - पता नहीं क्यों ?
बेला - क्या अब तुम फुलेरा में ही नहीं रहोगे ?
साहिल - नहीं यार । तुम अपना रिपोर्ट कार्ड दिखाना ।
बेला - ठीक है, तुम्हारा रिपोर्ट कार्ड भी दिखाना । (दोनों एक दूसरे का रिपोर्ट कार्ड देखने लगते हैं ।)
साहिल - तुम्हारी आँखों से आँसू क्यों आ रहे हैं ?
बेला - (हँसते हुए) मुझे क्या पता ? अब तुम्हारी आँखें भी लाल हो गई हैं क्यों ?
साहिल - मुझे भी नहीं पता ।
बेला - आज से मैं तुम्हें कैसे चिढाऊँ ?
साहिल – तो क्या ? हम छुट्टी के दिन फिर मिलेंगे ।
बेला - ठीक है, फिर मिलेंगे ।
साहिल - ठीक है बेला ।
(दोनों अलग-अलग रास्ते से चले जाते हैं ।)

PART 7 (रिपोर्ट कार्ड देखना) (साहिल बेला का रिपोर्ट कार्ड देख रहा था ---------------- एक इंच लंबा चोट का निशान था ।)

1. साहिल की आँखें लाल हो गईं । क्यों ?
बेला और साहिल अगले वर्ष अलग-अलग स्कूलों में पढनेवाले हैं। वे यह सहन नहीं सकते थे। दोनों रोने लगे। इससे साहिल की आँखें लाल हो गईं।
2. ‘ आज आखिरी बारी वे एक दूसरे की कोई चीज़ को छूकर देख रहे थे ।‘- इससे आपने क्या समझा ?
पाँचवीं तक एक मन से हर काम लेनेवाले साहिल और बेला आगे की पढाई केलिए अलग अलग स्कूलों में भर्ती होनेवाले हैं, यानी वे बिछुड रहे हैं । इस कारण दोनों पहले की तरह कुछ कर न पाएँगे, मिल न पाएँगे । इसलिए ऐसा कहा होगा ।
3. ‘ यह बारिशों से पहले की बारिश का दिन था ।‘ कहानी के प्रसंग में यह कैसे सार्थक होता है ?
हमेशा एकसाथ चलनेवाले साहिल और बेला आगे की पढाई केलिए अलग हो जानेवाले हैं । इस बिछुडन के बारे में आपस में बताकर दोनों दुखी हुए और उनकी आँखें भर गयीं । यह लेखक को बारिश से पहले की बारिश लगी ।

4. पटकथा (रिपोर्ट कार्ड देखने के बाद)

स्थान - स्कूल से घर जाने का रास्ता ।
समय - सुबह के 10 बजे ।
पात्र - 1. साहिल, करीब 11 साल का, कुर्ता और पतलून पहना है ।
2. बेला, करीब 11 साल की, फ्रॉक पहनी है ।
घटना का विवरण - साहिल और बेला दोनों किसी चिंता में मग्न है । वे आपस में बातें करने लगे ।

संवाद –

साहिल – तुम अपना रिपोर्ट कार्ड दिखाना ।
बेला - ठीक है, तुम्हारा रिपोर्ट कार्ड भी दिखाना । (दोनों एक दूसरे का रिपोर्ट कार्ड देखने लगते हैं ।)
साहिल - तुम्हारी आँखों से आँसू क्यों आ रहे हैं ?
बेला - (हँसते हुए) मुझे क्या पता ? अब तुम्हारी आँखें भी लाल हो गई हैं क्यों ?
साहिल - मुझे भी नहीं पता ।
बेला - आज से मैं तुम्हें कैसे चिढाऊँ ?
साहिल – तो क्या ? हम छुट्टी के दिन फिर मिलेंगे ।
बेला - ठीक है, फिर मिलेंगे ।
साहिल - ठीक है बेला ।
(दोनों अलग-अलग रास्ते से चले जाते हैं ।)

2. हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था PART -1 (कविता)

1.' व्यक्ति को जानना ' और ' हताशा को जानना ' का अर्थ क्या है ?

व्यक्ति को जानना - किसीको व्यक्तिगत रूप से यानी उसके नाम, पता, उम्र, ओहदा, जाति आदि से जानना ।

हताशा को जानना - किसीको उसकी हताशा,निराशा, असहायता या संकट को जानना ।

2. ' अपरिचित होने पर भी कवि ने हताश व्यक्ति की सहायता की ।'- इससे क्या संदेश मिलता है ?

किसी व्यक्ति की सहायता करने केलिए उसको व्यक्तिगत रूप से जानने की ज़रूरत नहीं है । उसकी हताशा, दुख-दर्द, विवशता, समस्या, आवश्यकता आदि को पहचानना ही असली जानना है । दो मनुष्यों के बीच मानवीय संवेदना चाहिए ।

3. कवितांश का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ समकालीन हिंदी साहित्य के विख्यात कवि श्री. विनोद कुमार शुक्ल की सुंदर कविता हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था से ली गई हैं । इस कविता में कवि जानना शब्द की हमारी जानी पहचानी रूढी को तोड देते हैं ।

कवि कहते हैं कि सडक पर हताशा से बैठे एक अपरिचित व्यक्ति को देखते ही कवि उसकी समस्या को जल्दी पहचान लेते हैं । इसलिए उसकी सहायता करने केलिए उसकी ओर हाथ बढाते हैं । कवि के हाथ पकडकर वह खडा हुआ । कवि को वह नहीं जानता था, पर कवि के हाथ बढाने को जानता था । दोनों साथ-साथ चले । यानी कवि व्यक्ति को जानने के बदले उसकी समस्या को पहचाने । कवि का कहना है कि अकसर हम दूसरों को उनके नाम, पते, उम्र, ओहदे, जाति आदि के द्वारा जानते हैं । लेकिन असल में किसीको जानना है तो उसकी हताशा,निराशा, असहायता या संकट को जानना ही काफी होगा । किसीको व्यक्तिगत रूप से जानना और उसकी हताशा, दुख-दर्द, विवशता, समस्या, आवश्यकता आदि से जानना दोनों अलग है । मनुष्य की समस्या को पहचानने केलिए उसको वैयक्तिगत (व्यक्तिगत) रूप से जानने की ज़रूरत नहीं है । सडक पर घायल पडे व्यक्ति को देखना पडे तो हमें समझना चाहिए कि वह व्यक्ति मुसीबत में है और उसे हमारी मदद की आवश्यकता है । यहाँ कवि मनुष्य को मनुष्य की तरह जानने की याद दिलाती है । कविता का संदेश है कि मनुष्यों के बीच मानवीय संवेदना का होना अनिवार्य है, जानकारियाँ नहीं ।

जानना शब्द को एक विशेष अर्थ प्रस्तुत करनेवाली इस कविता की प्रासंगिकता सार्वकालिक है । कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है । गद्य में लिखी हुई इस कविता में गीतात्मकता का बोध खूब मिलता है । यह कविता कोई लोकगीत जैसा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देती है । जानता था और नहीं जानता था का प्रयोग अधिक आकर्षक बना है ।

4. रपट - सडक दुर्घटना में एक व्यक्ति घायल पडा। किसीने उसकी सहायता नहीं की। बहुत समय तक वह सडक पर ही पडा रहा।

घायल आदमी पडे रहे लंबी देर सडक पर

स्थान : ------- कल शाम को किसी अज्ञात गाडी के टकराने से घायल हुए एक आदमी बहुत समय सडक के किनारे ही पडा रहा । उसके शरीर से खून बह रहा था । उसका एक हाथ टूट गया था । सिर पर भी चोट लग गई थी । उसकी हालत बहुत नाजुक थी । बहुत लोग उसके पास से गुज़रे । पर किसीने उसकी सहायता करने की कोशिश नहीं की । कुछ लोग उसे देखे बिना चला गया तो कुछ उसे एक शो की तरह देखता रहा तो और कुछ उसकी फोटो खीचकर ज़्यादा लैक प्राप्त करने की कोशिश में लगे रहे । भाग्य से अंत में एक बूढा आदमी आकर उसे अस्पताल पहुँचाया । उनके अवसरोचित हस्तक्षेप से उसकी जान बच गई । इससे पता चलता है कि आज के ज़माने के लोगों में मनुष्यता बहुत कम देखने को मिलते हैं । वे अपने–अपने बारे में ही सोचते हैं । दूसरों की मदद करने में वे हिचकते हैं । यह तो बहुत खतरनाक स्थिति है ।

5. व्यक्ति को जानने के संबंध में कवि के मत पर टिप्पणी

श्री. विनोद कुमार शुक्ल द्वारा लिखित हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था नामक कविता में प्रस्तुत प्रसंग आता है । कविता द्वारा कवि ने जानना शब्द के रूढीग्रस्त अर्थ को पूरी तरह से बदल दिया है । कवि का कहना है कि अकसर हम दूसरों को उनके नाम, पते, उम्र, ओहदे, जाति आदि के द्वारा जानते हैं । लेकिन असल में किसीको जानना है तो उसकी हताशा,निराशा, असहायता या संकट को जानना ही काफी होगा । किसीको व्यक्तिगत रूप से जानना और उसकी हताशा, दुख-दर्द, विवशता, समस्या, आवश्यकता आदि से जानना दोनों अलग है । मनुष्य की समस्या को पहचानने केलिए उसको वैयक्तिगत (व्यक्तिगत) रूप से जानने की ज़रूरत नहीं है । सडक पर घायल पडे व्यक्ति को देखना पडे तो हमें समझना चाहिए कि वह व्यक्ति मुसीबत में है और उसे हमारी मदद की आवश्यकता है । यहाँ कवि मनुष्य को मनुष्य की तरह जानने की याद दिलाती है । कविता का संदेश है कि मनुष्यों के बीच मानवीय संवेदना का होना अनिवार्य है, जानकारियाँ नहीं ।

2. हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था PART - 2 (टिप्पणी)

1. ' जानना ' शब्द की लेखक की व्याख्या से आप कहाँ तक सहमत हैं ?

जानना शब्द की लेखक की व्याख्या से मैं सहमत हूँ । अकसर हम दूसरों को उसके नाम, पते, उम्र, ओहदे या जाति से ही जानते हैं । लेकिन सच में किसीको जानना है तो उसके दर्द और एहसास को समझना चाहिए । उसकी हताशा, असहायता, दुख और कठिनाई को जाने बिना जानना कभी पूर्ण नहीं होता ।

2. पोस्टर (संदेश) points – अंगदान का महत्व

1. अंगदान जीवन दान ... अंगदान जीवन में मुस्कान ।	2. अंगदान सर्वश्रेष्ठ दान ... स्वर्ग में स्थान मिलने को करो अंगदान ।
3. अंधविश्वास को छोडिए ... अंगदान में सहयोग दीजिए ।	4. मृत्यु के बाद दीजिए दूसरों को प्राण ... आगे बढिए और कीजिए अंगदान ।
5. करो दान किड्नी, नेत्र, हृदय, जिगर और देह की ... अपनी मृत्यु के बाद किसीको जीवित रहने को मदद करें ।	6. जीते जीते रक्तदान जाते जाते अंगदान और जाने के बाद नेत्रदान और देहदान।

विश्व अंगदान दिवस – अगस्त 13

3. टूटा पहिया PART -1 (मैं रथ का ----- घिर जाए)

1. कवि ने टूटा पहिए को मत फेंकने को क्यों कहा गया है ?

कवि के अनुसार जिस चीज़ को हम फालतू समझकर फेंक देते हैं,उसका कभी उपयोग करने का मौका आ सकता है । महाभारत युद्ध में महारथियों का मुकाबला करने में रथ के टूटे हुए पहिए का सहारा लिया था । उसी प्रकार शोषण से पीडित आम जनता केलिए शासक वर्ग के अधर्म और अत्याचार के खिलाफ मानवीय मूल्य रूपी यह टूटा पहिया काम आएगा ।

2. अभिमन्यु को दुस्साहसी क्यों कहा गया है ?

क्योंकि केवल सोलह साल का लडका अभिमन्यु कौरव पक्ष के बडे-बडे महारथियों से लोहा लोनो को तैयार हो जाता है ।

3. **कवितांश का आशय** (मै रथ का टूटा हुआ पहिया .... अभिमन्यू आकर घिर जाए !)

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि **' श्री . धर्मवीर भारती '** की कविता संग्रह **' सात गीत वर्ष '** से चुनी गई ' टूटा पहिया ' कविता से ली गई हैं । महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि ने वर्तमान सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला है । इसमें कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए ।

कवि रथ का टूटा हुआ पहिया बताने के जैसे कहते हैं कि मैं भले ही रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ, किंतु मुझे अनुपयोगी मानकर मत फेंको । क्योंकि कौरवों से रचित दुरूह चक्रव्यूह में अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ दुस्साहस के साथ अभिमन्यु आकर घिर जाएगा । यानी जीवन की समस्याएँ रूपी चक्रव्यूह में शोषण की अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ कोई शोषित मनुष्य अभिमन्यु के समान आ जाए तो टूटा पहिया, टूटे मानवीय मूल्य ही उसका सहारा बन जाएगा । यहाँ टूटा पहिया मानवीय मूल्यों का,चक्रव्यूह जीवन की समस्याओं का और अभिमन्यु शोषण से पीडित आम जनता का प्रतीक है ।

मानवीय मूल्यों की शक्ति व्यक्त करनेवाली यह कविता हर तरह से बिलकुल प्रासंगिक तथा अच्छी है । कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है ।

4. टूटा पहिया कविता की प्रासंगिकता पर टिप्पणी लिखें ।

टूटा पहिया हिन्दी के प्रसिद्ध कवि धर्मवीर भारती की प्रतीकात्मक कविता है । इस कविता के द्वारा कवि लघु मानव की प्रधानता पर बल देते हैं ।

कवि महाभारत के एक पौराणिक प्रसंग का सहारा लेते हैं । चक्रव्यूह को भेदकर उसमें प्रवेश किया अभिमन्यु उसमें फँस जाता है । कौरव पक्ष के सभी महायोद्धा एकसाथ मिलकर अभिमन्यु पर आक्रमण करते हैं । उसके घोडे, रथ, हथियार – सब नष्ट कर देते हैं । तब उसे रथ का एक टूटा पहिया ही एकमात्र सहारा बन जाता है । इस टूटे पहिए की सहायता से वह उन महारथियों से थोडी देर केलिए अपनी रक्षा करता है और अंत में वीरमृत्यु होती है ।

यहाँ एक सारहीन या तुच्छ टूटा पहिया ही वीर योद्धा अभिमन्यु के लिए सहायक बनता है । इसी प्रकार समाज के तुच्छ माने जानेवाले मानव भी क्रांति (विप्लव) के वाहक बन सकते हैं और सामाजिक परिवर्तन संभव करा सकते हैं । अत : हमें यह मानना चाहिए कि समाज के तुच्छ माने जानेवाली बातें भी कभी-न-कभी बडी सहायक हो सकती हैं ।

वर्तमान समाज में भी तुच्छ माने जानेवाले मानव का महत्वपूर्ण स्थान है । सच्चे प्रजातंत्र में कोई भी व्यक्ति तुच्छ नहीं होता । शासन का निर्माण भी उसके हाथों से हो सकता है । याने यह कविता बिलकुल अच्छी और प्रासंगिक है ।

PART – 2 (अपने पक्ष को ----- लोहा ले सकता हूँ)

1. टूटा पहिया ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता है । इससे आपने क्या समझा ?

शोषक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति के ज़रिए ब्रह्मास्त्र से अकेले निरायुध व्यक्ति की असहाय आवाज़ को कुचल देना चाहते हैं । अगर उसके शस्त्रहीन हाथों में रथ का पहिया आ जाए तो वह ब्रह्मास्त्र से लड सकता है, उसका सामना कर सकता है ।

2. अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी
बडे-बडे महारथी
अकेली निहत्थी आवाज को
अपने ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहें ! - इन पंक्तियों के आशय पर चर्चा करें ।

अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी बडे बडे महारथियों ने अपने ब्रह्मास्त्रों से अभिमन्यु अकेली निहत्थी आवाज़ को कुचल डालना चाहा । शासक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति का दुरुपयोग करके आम जनता को कुचल डालना चाहता है ।

3. तब मैं
रथ का टूटा हुआ पहिया
उसके हाथों में
ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ ! - इन पंक्तियों में चर्चित पौराणिक संदर्भ वर्तमान परिवेश में कहाँ तक प्रासंगिक है ?

चक्रव्यूह में फँसे निरायुध अभिमन्यु ने रथ के टूटे हुए पहिए से शत्रुओं के ब्रह्मास्त्रों का लोहा ले सकता है । उसी प्रकार शासक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति के जरिए आम जनता पर अत्याचार करते समय इससे मुक्ति पाने केलिए उनको मानवीय मूल्यों का सहारा लेना पडेगा ।

4. कवितांश का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि **' श्री . धर्मवीर भारती '** की कविता संग्रह **' सात गीत वर्ष '** से चुनी गई ' टूटा पहिया ' कविता से ली गई हैं । महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि ने वर्तमान सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला है । इसमें कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए ।

कवि रथ का टूटा हुआ पहिया बताने के जैसे कहते हैं कि अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी बडे बडे महारथियों ने अपने ब्रह्मास्त्रों से अभिमन्यु, अकेली निहत्थी आवाज़ को कुचल डालना चाहा । उस वक्त अभिमन्यु ने अपने रथ के टूटे हुए पहिए को हथियार बनाकर ब्रह्मास्त्रों से लोहा लिया था । शासक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति का दुरुपयोग करके आम जनता को कुचल डालना चाहता है । ऐसी अवसर पर मैं, रथ का टूटा पहिया मानवीय मूल्य बनकर निरायुध के हाथ में आ जाता हूँ और ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ । यहाँ महारथी शोषक वर्ग का और ब्रह्मास्त्र शोषक के हाथ की महाशक्ति का प्रतीक है ।

मानवीय मूल्यों की शक्ति व्यक्त करनेवाली यह कविता हर तरह से बिलकुल प्रासंगिक तथा अच्छी है । कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है ।

PART - 3 (मैं रथ का ----- आश्रय ले)

1. इतिहासों की सामूहिक गति
सहसा झूठी पड जाने पर
क्या जाने
सच्चाई टूटे हुए पहियों का आश्रय ले ! - इन पंक्तियों से कवि क्या बताना चाहते हैं ?

आज के इस बदलते युग में भी इतिहास की सामूहिक गति सत्य और धर्म को छोडकर असत्य और अधर्म के मार्ग पर चलने लगती है । तब सत्य के पक्ष, आम जनता को अधार्मिक शक्तियों के विरोध करने में तुच्छ माननेवाले इस टूटा हआ पहिया यानी मानवीय मूल्य का सहारा लेना पडेगा । इसलिए हमें टूटा पहिया रूपी मानवीय मूल्य की उपेक्षा नहीं करना चाहिए। मुसीबत के अवसर पर अभिमन्यु केलिए टूटा पहिया कैसे उपयोगी बना उसी प्रकार आम जनता केलिए मानवीय मूल्य काम आएगा ।

2. टूटा पहिया किसका प्रतिनिधित्व करता है ? स्पष्ट करें ।

टूटा पहिया **मानवीय मूल्य** का प्रतिनिधित्व करता है । हमें किसी भी मूल्य और वस्तु को निस्सार, अनुपयोगी मानकर फेंकना नहीं चाहिए । क्योंकि पता नहीं कब समय बदले, परिस्थितियाँ विपरीत हो जाए और वह निस्सार वस्तु या मूल्य अपनेलिए सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध हो । तुच्छ-सी लगनेवाली वस्तु भी सांत्वना देने में समर्थ हो सकती है । जब दुनिया में मानव मूल्यों का नाश होता रहेगा, तो साधारण मनुष्य इन्हीं मानव मूल्यों को समेटकर समाज की भलाई केलिए कर्मनिरत रहेगा । मानवीय मूल्यों के संरक्षण से ही संसार की उन्नति होगी ।

3. कवितांश का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि **' श्री . धर्मवीर भारती '** की कविता संग्रह **' सात गीत वर्ष '** से चुनी गई ' टूटा पहिया ' कविता से ली गई हैं । महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि ने वर्तमान सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला है । इसमें कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए ।

टूटा पहिया फिर भी अपने महत्व की याद दिलाती है कि मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ, लेकिन मुझे नहीं फेंकना । मुसीबत के अवसर पर अभिमन्यु केलिए टूटा पहिया कैसे उपयोगी बना उसी प्रकार आम जनता केलिए मानवीय मूल्य काम आएगा । इतिहास की सामूहिक गति सत्य और धर्म को छोडकर असत्य और अधर्म के मार्ग पर चलने लगती है । उस समय सत्य के पक्ष, आम जनता को अधार्मिक शक्तियों के विरोध करने में तुच्छ माननेवाले इस टूटा हआ पहिया यानी मानवीय मूल्य का सहारा लेना पडेगा । यानी समाज में शोषण और असमत्व बढते वक्त आम जनता को मानवीय मूल्यों का सहारा लेना पडता है । यहाँ टूटा पहिया मानवीय मूल्य का प्रतीक है ।

मानवीय मूल्यों की शक्ति व्यक्त करनेवाली यह कविता हर तरह से बिलकुल प्रासंगिक तथा अच्छी है । कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है ।

4. आई एम कलाम के बहाने PART -1 (मिहिर का संस्मरण)

1.' हमारा सौदा था घंटी में खाने की अदला-बदली का ।'- इस तरह की अदला बदली से हम क्या समझ पाते हैं ?

सच्ची दोस्ती का मिसाल यहाँ हम देख सकते हैं । दोनों के बीच आपस में ऊँच -नीच या अमीर-गरीब का कोई भेद भाव नहीं था । इसलिए मोरपाल को पसंद राजमा-चावल लेखक लाकर देता था और लेखक को पसंद छाछ मोरपाल भी लाकर देता था ।

2. खाने के डिब्बे में राजमा देखकर मोरपाल की बाँछें खिल जाती थीं । इससे आप क्या समझते हैं ?

अपनी गरीबी के कारण घर में राजमा खरीद नहीं सकता था । इसलिए उसे राजमा देखने या खाने का अवसर नहीं मिला था । इसलिए राजमा मोरपाल केलिए खास चीज़ थीं ।

3. वार्तालाप (खाने की अदला बदली के बारे में)

मोरपाल - अरे मिहिर, जल्दी आओ हम साथ खाएँ ।
लेखक - पुस्तक बैक में रखकर मैं अभी आया ।
मोरपाल - वाह ! तुम्हारे टिफिन बॉक्स में यह क्या है ?
लेखक - यह तो राजमा है । क्या तुमने इसे अभी तक खाया नहीं ?
मोरपाल - नहीं यार । मैं इसे आज पहली बार देख रहा हूँ ।
लेखक - मेरेलिए सामान्य सी चीज़ तुम्हारेलिए इतना खास ! खाकर कहिए कैसा है राजमा-चावल ? तुमने आज क्या लाया ?
मोरपाल - मैं तो छाछ लाया हूँ ।
लेखक - वाह छाछ ! इसे खाए कितने दिन हुए ?
मोरपाल - तुम्हारे चावल और राजमा की कडी बहुत स्वादिष्ठ है ।

लेखक - तुम्हारे सब्जी-चावल और छाछ भी बहुत बढिया है ।

मोरपाल - सच ! तो हम एक काम करें, आज से हर दिन खाना अदला-बदली करके खाएँ ।

लेखक - ज़रूर । आज से मेरे घर से लाते राजमा-चावल तुम खाओगे और तुम्हारे घर से लाते छाछ-चावल मैं ।

मोरपाल - सचमुच यह तो बडी खुशी की बात है । खेलने जाना है न ?जल्दी खाएँ ।

लेखक - ठीक है ।

(दोनों खाने की अदला-बदली करके खाते हैं ।)

4. मोरपाल की डायरी (पहली बार राजमा खाए दिवस)

तारीख : ....

आज मेरेलिए एक विशेष दिन था । पहली बार मैंने राजमा खाया । कितना स्वादिष्ठ था। खाने केलिए बैठने पर मेरे दोस्त मिहिर के टिफिन बॉक्स में रखे राजमा देखते ही मेरी बाँछें खिल गयी थीं । उसे खाने से पहले मैंने कभी राजमा देखा भी नहीं था । राजमा जैसी चीज़ मेरेलिए तो अपूर्व ही था, पर उसकेलिए वह एक साधारण चीज़ था । मैं और उसके बीच खेल घंटी में खाने की अदला बदली करने का निश्चय किया । उसके घर से लाया राजमा-चावल मैंने खाया और मेरे घर से लाया छाछ -चावल उसने भी । जैसे मैंने राजमा खाया, वैसे उसने छाछ को भी बहुत चाव से खा लिया । ऐसा लगा कि छाछ उसकी कमज़ोरी है । आज से हर दिन मैं अपने घर से छाछ लाकर उसे दूँगा ।

5. ' रविवार की छुट्टी का दिन उनकेलिए हफ्ते का सबसे बुरा दिन हुआ करता ।'- ऐसा क्यों कहा गया है ?

स्कूल से गहरा प्रेम होने से मोरपाल ओर उसके जैसे सहपाठी बिना नागा रोज स्कूल आना चाहता था । स्कूल उनको जीवन में सफलता पाने की जोश पैदा करता था । रविवार को स्कूल न होने से वे निराश हैं और उसे हफ्ते का सबसे बुरा दिन मानते हैं ।

6. बचपन का दोस्त मोरपाल के बारे में मिहिर की यादें क्या –क्या हैं ?

मोरपाल मिहिर का अच्छा मित्र था । वह एक गरीब परिवार का था। वह रोज़ 15 किलोमीटर साइकिल चलाकर स्कूल आता था । वह अपने घर से छाछ लाता था और वह मिहिर को देकर मिहिर का राजमा-चावल खाता था । मोरपाल रोज़ यूनीफॉर्म पहनना और स्कूल जाना पसंद करता था ।

7. लेख – गरीब बच्चों की हालत

हर बच्चा खेलना-खाना बहुत पसंद करता है । पर बहुत से बच्चे गरीब परिवार में जन्म लेने के कारण अपने बचपन से वंचित हैं । उनको स्कूल जाने के बजाय काम पर जाना पडता है । स्कूल जाने का मौका मिलते बच्चे भी पढाई में ध्यान नहीं दे सकते । उन्हें माँ-बाप के साथ खेत-मजूरी करने जाना पडता है । कभी समय पर खाना भी नहीं मिलता। मोरपाल जैसे कई बच्चे हैं जो स्कूल को बहुत पसंद करते हैं, पढाई में आगे हैं । पर भी बीच में पढाई छोडकर पूरा समय काम में लग जाना पडता है । गरीब बच्चे ऐसे कई तरह की परेशानियों में जीने को मजबूर होते हैं ।

8. मिहिर का पत्र मामाजी को (स्कूल के अनुभवों के बारे में)

स्थान : ....

तारीख : ....

प्यारे मामाजी,

सादर प्रणाम । आप कैसे हैं ? घर में सब ठीक हैं न ? मैं यहाँ ठीक हूँ , मेरी पढाई अच्छी तरह से चल रही है ।

मैं इस पत्र के द्वारा अपने स्कूल के अनुभवों का वर्णन करना चाहता हूँ । मेरे स्कूल में मेरा सबसे अच्छा मित्र है मोरपाल । हम दोनों कक्षा में एकसाथ बैठते हैं, एकसाथ खाना खाते हैं । वह एक गरीब लडका है । उसका घर स्कूल से 15 किलोमीटर दूर है । मोरपाल साइकिल चलाता हुआ स्कूल आता है । उसके घर से लाया गया छाछ मुझे बहुत पसंद है । खेल घंटी में हम खाने अदला-बदली करते हैं । उसे तो मेरा राजमा चावल बहुत पसंद है । मेरे सभी दोस्त अच्छे हैं । लेकिन मुझे स्कूल जाना और यूनीफॉर्म पहनना उतना अच्छा नहीं है । फिर भी मैं रोज़ स्कूल जाता हूँ ।

शेष बातें अगले पत्र में । मामीजी और भाई-बहनों को मेरा हैलो बोलिएगा ।

आपका भानजा

(हस्ताक्षर)

नाम ।

सेवा में,

नाम

पता ।

9. मैं स्कूल की नीली-खाकी यूनीफॉर्म से हमेशा चिढा करता । - इससे आपने क्या समझा ?

लेखक के पास अपनी पसंद से बडे शहरों के बडे बाज़ारों से खरीदे बेहतर कपडे थे । इसलिए स्कूल की नीली-खाकी यूनीफॉर्म से सदा चिढा करता था और उसे पहनना पसंद नहीं करता था ।

PART - 2 (नील माधव पांडा की ' आई एम कलाम ' फिल्म)

1. ' बाकी निन्यानवे कहानियों को कभी भूलना नहीं चाहिए जो हमारे बचपनों में है ।'- लेखक ने ऐसा क्यों कहा है ?

समाज में बहुत कम लोग ही बचपन में देखते अपना सपना पूर्ण कर पाता है । बाकी अपने पारिवारिक परेशानियों के अनुसार जीने को मजबूर होते हैं । फिल्म में कलाम को अपनी मंजिल मिलती है लेकिन लेखक का मित्र मोरपाल अपना लक्ष्य पाने में सफल नहीं बनता । इसलिए लेखक ऐसा कहते हैं ।

2. ' लेकिन छोटू सिर्फ छोटू होकर नहीं जीना चाहता ।'- इससे आपने क्या समझा ?

चाय की दूकान में काम करनेवाला होने पर भी छोटू की आकांक्षाएँ बडी हैं । टीवी में देखे राष्ट्रपति कलाम जी का भाषण सुनकर, उनसे प्रभावित होकर वह अपना नाम कलाम रख देता है । स्कूल की अच्छी शिक्षा पाकर डॉ. कलाम जैसा बडा आदमी बनना उसका सपना है ।

3. छोटू की कलाकारी की प्रशंसा भाटी सा क्यों करता है ?

क्योंकि छोटू हर काम अच्छी तरह से करता है । उसके हाथ से बनाई चाय में जादू है । वह जल्दी ही भाषाएँ सीख लेता है ।

SREEJITH R KOVOOR VARKALA, SCRIPT

4. कलाम की डायरी (माँ छोटू को भाटीसा की चाय की दुकान में नौकरी केलिए छोड देती है ।)

तारीख : ....

आज मैं अपनी माँ के साथ गाँव से भाटी सा की चाय की थडी में आया । मुझे यहाँ काम करने केलिए छोडके मेरी माँ गाँव चली गई । मेरे घर की गरीबी ने मुझे यहाँ पहुँचाया । आगे मुझे यहाँ रहना पडेगा । कोई परवाह नहीं । मुझे एक बडी इच्छा है । राष्ट्रपति कलाम के समान बनना । मैं इस चाय की थडी से पैसा कमाकर अपने लक्ष्य तक पहुँचूँगा । ईमानदारी से काम करके सबकी प्रशंसा का पात्र बनना है । लेकिन सबसे पहले पढाई होनी चाहिए । अन्य बच्चों की तरह स्कूल जाकर पढाई करने का अवसर मुझे कब मिलेगा । यदि भाटी सा मेरी सहायता करेंगे तो मैं किसी न किसी तरह छोडा-थोडा पढना भी चाहता हूँ । जो भी हो मैं अपना प्रयास ज़ारी रखूँगा । छुट्टी मिलने पर माँ से फिर मिलूँगा । मेरे जीवन का यह अविस्मरणीय दिन मैं कभी नहीं भूलूँगा ।

5. वार्तालाप (माँ छोटू को भाटीसा की चाय की दुकान में नौकरी केलिए छोड देती है ।)

माँ - जी आप इस थडी के मालिक हैं ?

भाटी सा - हाँ । बताइए माँ, मैं आपकी क्या सहायता करूँ ?

माँ - यह मेरा बेटा है, इसे आपकी दुकान में काम पर रखने की कृपा कीजिए ।

भाटी सा - आप कहाँ से रही हैं ?

माँ - मैं जैसलमेर के पासवाले एक गाँव से आती हूँ । मैं अपनी गरीबी से इस बच्चे को बचाना चाहती हूँ । आप मेरी मदद कीजिए ।

भाटी सा - ठीक है । मैं इसे कितने रुपए दे दूँ ? छोटा लडका है ।

माँ - आप कुछ भी दीजिए, इसे अपने पास रखने की कृपा करें ।

भाटी सा - ज़रूर । एक महीना देख लेता हूँ । ठीक है तो अपने पास ही रख लूँगा ।

माँ - बडी मदद होगी साहब ।

भाटी सा - अंदर आओ बेटा, अपने सामान रख लो । क्या आपका बेटा जल्दी यहाँ के सारे काम सीख लेगा ?

माँ -ज़रूर साहब, मेरा बेटा सीखने में तेज़ है । वह जल्दी ही सब सीख लेगा ।

भाटी सा - तो ठीक है माँ, आप जाइए । मैं इसे देख लूँगा ।

माँ - धन्यवाद साहब ।

भाटी सा - धन्यवाद माँ ।

6. रणविजय बहुत परेशान हुआ । क्यों ?

एक दिन रणविजय को उसके स्कूल में भाषण देने केलिए कहा जाता है । लेकिन उसकी हिंदी इतनी अच्छी नहीं थी । इस कारण रणविजय बहुत परेशान हुआ ।

7. रपट तैयार करें (स्कूल के भाषण प्रतियोगिता में रणविजय को प्रथम स्थान मिला)

भाषण प्रतियोगिता ; रणविजय को प्रथम स्थान

स्थान : --------- कल जैसलमेर के सरकारी हाईस्कूल में भाषण प्रतियोगिता चलाई गई । इसमें ढाणा के राणा का बेटा कुँवर रणविजय को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ । पुरस्कार प्राप्ति के बाद उसने कहा कि अपने दोस्त कलाम ने यह भाषण तैयार किया था । इसलिए पुरस्कार उसकेलिए है । कुँवर की हिन्दी अच्छी न होने से कलाम उसकी मदद की थी । यह पुरस्कार प्राप्ति रणविजय और कलाम के बीच की दोस्ती की अनूठी निशानी भी है । पुरस्कार वितरण स्कूल के प्रधानाध्यापिका ने किया। ढाणी में कुँवर के विजय पर खुशी मनाई गई ।

8. वार्तालाप (स्कूल में भाषण प्रतियोगिता)

कलाम - अरे कुँवर, तुम क्यों उदासीन हो ?

रणविजय - कुछ नहीं छोटू ।

कलाम - क्या बात है ? जो भी हो, हल हो जाएगा ।

रणविजय - मुझसे कल स्कूल में हिंदी में भाषण देने केलिए कहा है ।

कलाम - वह अच्छी बात है न ?

रणविजय - बात यह है छोटू ... मुझे हिंदी अच्छी तरह मालूम नहीं है ।

कलाम - यही बात है न ... ? मैं तुम्हारी मदद करूँगा ।

रणविजय - कैसे ?

कलाम - मैं लिख दूँगा, तुम प्रस्तुत करो ।

रणविजय - ज़रूर । बहुत बहुत धन्यवाद छोटू ।

कलाम - तुम मेरा मित्र हो न ... मुझसे धन्यवाद कहने की कोई आवश्यकता नहीं ।

रणविजय - ठीक है यार ।

9. छोटू ने चोरी का आरोप सहन किया । क्यों ?

दोस्ती का प्रण न तोडने केलिए और रणविजय को राणा से उससे की दोस्ती की सज़ा मिलने से बचाने केलिए वह चोरी का आरोप सहन करता है ।

10. ‘ लेकिन कलाम फिर कलाम है ’- लेखक के इस प्रस्ताव पर अपना विचार लिखें ।

राणा सा के कारिंदे कलाम पर चोरी का आरोप लगाने पर भी मित्र रणविजय से की दोस्ती का प्रण न तोडने केलिए वह उसको सह लेता है । रणविजय को राणा से उससे की दोस्ती की सज़ा मिलने से बचाने केलिए वह ऐसा करता है । अभावों में रहने पर भी कलाम दोस्ती को ऊँचा स्थान देनेवाला होने से लेखक ऐसा कहते हैं ।

11. कलाम का पत्र (दोस्ती को बनाए रखने में अपनी परेशानी, चोरी का आरोप)

स्थान : ………………

तारीख : ………………

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं अब यह पत्र भेज रही हूँ ।

यहाँ पर मेरा एक मित्र है जिसका नाम है रणविजय। वह राणा सा का पुत्र है । कुछ दिनों के पहले के राणा सा के कारिंदे मेरे घर की तलाशी लेने आये थे । कुँवर रणविजय की कुछ चीज़े मेरे घर से मिलीं और इससे मेरे ऊपर चोरी का आरोप लगाया गया । पर मैंने इस आरोप के सामने अपनी दोस्ती का प्रण नहीं तोडा । मैं चोरी का आरोप सह लेता था, पर रणविजय से हुई दोस्ती के बारे में नहीं बताया । इस प्रकार बहुत परेशानियाँ का अनुभव महसूस करते हुए पिछले हफ्ता चला गया ।

पता नहीं, कब मुझे अपने पसंदीता स्कूल जाकर पढने का अवसर मिलेगा ? मुझे मिलने तुम कब यहाँ आओगे ? जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में,
नाम
पता ।

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

12. पोस्टर – फिल्म का प्रदर्शन

प्रगति फिल्म क्लब, चेन्नै
वार्षिक समारोह

2020 मार्च 18, बुधवार को
सुबह 10 बजे सिनी हॉल, चेन्नै

उद्घाटन – जिलाधीश
अध्यक्ष – क्लब प्रसिडेंट

* विविध प्रधियोगिताएँ
* सार्वजनिक सम्मेलन
* पुरस्कार वितरण

फिल्म का प्रदर्शन -
आई एम कलाम
प्रदर्शन दोपहर साढे 2 बजे से - 4 बजे तक

भाग लें … लाभ उठाएँ …
सबका स्वागत

13. कलाम की डायरी (फिल्म के अंत में कलाम का सपना साकार हो जाता है ।)

तारीख : ……………………….

आज अपनी पसंद के स्कूल में मेरा पहला दिन । मेरा सपना साकार हो गया । स्कूल बस में मित्र रणविजय के साथ स्कूल गया । स्कूल यूनीफॉर्म पर टाई बाँधकर हम दोनों साथ- साथ चले । क्लास में उसके साथ बैठकर पढा । स्कूल की बात माँ से कहने पर वे भी खुश हुई । याद आया, चाय की दूकान में काम करते समय लफ्टन से रूठता था । लूसी मैडम ने मुझे दिल्ली ले जाकर कलाम जी से मिलवाने का वादा दिया था । चोरी के आरोप पर गाँव छोडकर दिल्ली पहूँचा था । लेकिन कलाम जी से मिल न सका । पर मेरी चिट्ठी कलाम जी तक जरूर पहुँचेगी । सब सपने जैसे लग रहे हैं आज ! भाटीसा आजकल बहुत खुश दिखते हैं । अपनी पढाई का खर्चा मैं खुद उठाऊँगा । अच्छी तरह पढ -लिखकर मैं कलाम जी जैसा बडा आदमी बनूँगा ।

14. छोटू उर्फ कलाम ने राष्ट्रपति डॉ.कलाम को देने लिखा पत्र

जैसलमेर
06 जून 2019

आदरणीय राष्ट्रपति साहब,

नमस्कार । आप कैसे हैं ? आशा है आप वहाँ कुशल से हैं । मैं आपसे अपनी मंज़िल बताना चाहता हूँ । मैंने अपनी चिट्ठी में थोडी लिखी है, पर बहुत समझना । चिट्ठी को तार समझकर जल्दी जवाब देना ।

मैं ढाणी के एक थडी में काम करनेवाला एक बच्चा हूँ, जिसकी जिंदगी आपने बदल दी । मेरा नाम छोटू है,लेकिन मैं अपने को कलाम मानता हूँ । मुझे छोटू अच्छा नहीं लगता । टीवी में आपका भाषण सुना । कितना अच्छा था । मैं समझता हूँ कि हर बच्चा लाल बहादुर शास्त्री बन सकता है और राष्ट्रपति कलाम भी बन सकता है । मैं आप जैसे बनना चाहता हूँ । लेकिन मैं बडा गरीब हूँ । मुझे स्कूल जाने की इच्छा है , मेरे मित्र रणविजय के साथ । लूसी मैडम ने आपसे मिलवाने का वादा किया था ।

मुझे आपसे बहुत-सी बातें करनी हैं । मालूम है आपको बच्चे बहुत पसंद हैं । पढ-लिखकर मुझे आपके जैसा होना है । इसलिए कृपया आप मेरी मदद कीजिए । बस इतना ही कहना है और हाँ … धन्यवाद भी बोलना है ।

सेवा में
डॉ. अब्दुल कलाम
राष्ट्रपति
दिल्ली

आपका आज्ञाकारी छात्र
कलाम (छोटू)

5. सबसे बडा शो मैन

1. चार्ली की माँ स्टेज से हटने को क्यों मजबूर हो गई ?

गाते समय उसकी आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल जाने से लोग चिल्लाने लगे तो वे स्टेज से हटने को मजबूर हो गई।

2. इस अभद्र शोर ने माँ को स्टेज से हटने को मजबूर कर दिया। उस समय माँ की हालत कैसी होगी ?

जब तारीफ करनेवाले माँ की हालत समझे बिना शोर मचा रहे थे तब माँ ने बहुत तनाव का अनुभव किया होगा। किसी भी कलाकार यह सह पाना मुश्किल की बात है। उसे यह भय भी हुआ होगा कि अब किस प्रकार अपने बच्चे का पालन–पोषण करेगी।

3. मैनेजर चार्ली को स्टेज पर भेजने की ज़िद क्यों करने लगा ?

मैनेजर ने चार्ली को पहले कभी माँ के कुछ दोस्तों के सामने अभिनय करते हुए देखा था। इसलिए मैनेजर लोगों को शांत कराने केलिए चार्ली को स्टेज पर भेजने की ज़िद करने लगा।

4. वार्तालाप (माँ और मैनेजर के बीच का बहस)

मैनेजर - हेन्ना जी क्या हुआ ?
माँ - जी ... मेरा गला खराब हो गया है।
मैनेजर - और एक बार कोशिश करो।
माँ - कोई फायदा नहीं।
मैनेजर - देखो लोग शोर मचा रहे हैं। उनको किसी न किसी तरह शांत कराना होगा।
माँ - हे भगवान , अब मैं क्या करूँ ?
मैनेजर - लेकिन इसी तरह छोड दें तो वे सब कुछ तोड देंगे। मैं एक बात कहूँ ? तुम मानोगी न ?
माँ - बताइए।
मैनेजर - आपका बेटा है न चार्ली ... उसको स्टेज पर भेजो, वह कुछ करके दिखाएगा।
माँ - चार्ली ! आप यह क्या कह रहे हैं ?
मैनेजर - मैंने उसका अभिनय देखा है। बडा होशियार है। इसलिए कह रहा हूँ।
माँ - पाँच साल का छोटा बच्चा इस उग्र भीड को कैसे झेल पाएगा ? मुझे गर लगता है।
मैनेजर - घबराओ मत, मुझे उस पर विश्वास है।
माँ - मैं क्या बताऊँ सर। और कोई उपाय नहीं तो आपकी मर्ज़ी।

5. ' पाँच साल का चार्ली स्टेज पर अकेला था '– उस समय चार्ली ने क्या सोचा होगा ?

चार्ली ने सोचा होगा कि अपनी माँ की जगह लेते हुए मुझे हिम्मत से काम लेना होगा, माँ की तरह अच्छी तरह गाना होगा। यदि ऐसा नहीं हुआ तो लोग और शोर मचाएँगे, लेकिन माँ केलिए मुझे गाना होगा।

6. चार्ली को स्टेज पर क्यों जाना पडा ?

गाते समय उसकी आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल जाने से लोग चिल्लाने लगे तो वे स्टेज से हटने को मजबूर हो गई। तब मैनेजर लोगों को शांत कराने केलिए चार्ली को स्टेज पर भेजने की ज़िद करने लगा तो उसको स्टेज पर जाना पडा।

7. 'इस बात ने हॉल को हँसीघर में तब्दील कर दिया।'– कैसे ?

चार्ली का गाना आधा ही हुआ तो स्टेज पर पैसों की बौछार शुरू हो गई। तब गाना रोककर उसने पैसे बटोरने के बाद आगे गाने की घोषणा की। इस बात ने हॉल को हँसीघर में तब्दील कर दिया।

8. लोगों ने छोटे बच्चे की तारीफ क्यों की ?

चार्ली ने अपनी प्रस्तुति और बाल सहज भोलापन से जनता में गुदगुदी फैले दी थी। इसलिए लोगों ने छोटे बच्चे की तारीफ की।

9. अंत में दर्शकों ने तालियाँ बजाकर माँ का स्वागत क्यों किया ?

पाँच वर्षीय बालक चार्ली ने अपनी मासूमियत से गीत गाकर, बातचीत करके, नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर चिल्लाते दर्शकों को अपने वश में लाया। उसने जनता में गुदगुदी फैला दी। इसलिए दर्शकों ने तालियाँ बजाकर माँ का स्वागत किया।

10. ' चार्ली स्टेज पर पहली बार आया और माँ आखिरी बार ...।' माँ का शो आखिरी हो जाने का कारण क्या था ?

चार्ली की माँ अपनी आवाज़ फटने के कारण स्टेज पर गा नहीं सकती थी। विवशता से उसे स्टेज छोडना पडा। गले का दर्द बढ रही थी। उनके बदले स्टेज पर उतरे चार्ली को लोगों ने एक अच्छे कलाकार के रूप में मान लिया था। इसलिए उन्होंने ऐसा निर्णय लिया होगा।

11. 'उसने जन्म ले लिया था।'– इसका क्या मतलब है ?

स्टेज में पहली बार उतरे पाँच साल के चार्ली ने अपने भोलापन से दर्शकों के मन को आनंदित कर दिया। इस उम्र में उसने ऐसा कर दिया तो बाद में बडे होकर वह क्या–क्या नहीं कर सकता। इसलिए ऐसा कहा गया है।

12. समाचार (चार्ली का पहला शो)

माँ की आवाज़ फटी ; बेटा बना शो मैन

स्थान : .... लंदन के प्रसिद्ध थिएडर में पहली बार कदम रखा पाँच साल का बच्चा चार्ली ने स्टेज पर चमत्कार कर दिया। गाते वक्त अपनी माँ की आवाज़ को फटते देखकर मैनेजर के साथ वह स्टेज पर लाया गया। चार्ली निष्कलंकता से गा रहा था कि लोग प्रसन्न होकर स्टेज पर पैसा फेंकने लगे। बच्चा गाना बंद करके पैसे बटोरने लगा। इस व्यवहार ने हॉल को हँसीघर में बदल दिया। इसके बाद उसने दर्शकों से बातचीत की, नृत्य किया और अपनी माँ सहित कई गायकों की नकल उतारी। दर्शकों ने खुशी से तालियाँ बजाकर चार्ली का अभिनंदन किया। लोगों ने उसमें एक महान कलाकार को देख लिया था।

13. माँ की डायरी (अपनी हालत और बेटे का पहला शो)

तारीख : ....

आज का दिन मैं कैसे भूलूँ ? ... दुख और खुशी भरा दिन । मेरा लाडला चार्ली आज शो मैन बन गया । उसका पहला शो हमेशा यादों में रहेगा । लगता है मैं आगे गा नहीं पाऊँगी । गले में खराबी है । गाते वक्त मेरी आवाज़ को फटते देखकर मैनेजर के साथ वह स्टेज पर लाया गया । मैं बहुत डर गयी थी । लेकिन बेटा चार्ली ने अपनी निष्कलंकता से गीत गाकर, बातचीत करके, नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर सबको खुश कराने लगा । खूब पैसा भी मिला । शैतान, मेरी फटी आवाज़ का भी नकल उतार दी । हे भगवान ! आगे भी मेरा लाडला शो में कमाल करे ।

14. वार्तालाप - चार्ली और माँ (चार्ली के पहली शो के बाद)

माँ – आज तूने कमाल कर दिया बेटे !
चार्ली – लेकिन मैं खुश नहीं हूँ अम्मा ।
माँ – क्या हुआ बेटा ?
चार्ली – आप पर लोगों ने ...
माँ – छोड दो बेटा, गाना बीच में रुक गया न ?
चार्ली – आपकी आवाज़ को क्या हुआ माँ ?
माँ – पता नहीं। लगता है अब गा नहीं सकती ...
चार्ली – ऐसा न कहो माँ ।
माँ – दर्शकों ने तुझे मान लिया है, इस पर मैं खुश हूँ ।
चार्ली – भूल जाओ माँ, सब ठीक हो जाएँगे ।

6. अकाल और उसके बाद PART - 1 (कई दिनों तक ------------- हालत रही शिकस्त)

1. कवितांश का आशय

हिंदी के मशहूर प्रगतिशील कवि नागार्जुन ने अकाल और उसके बाद कविता के प्रस्तुत अंश में अनेक बिंबों और प्रतीकों से सजाकर अकाल की भीषणता का वर्णन किया है । कविता में अकाल से ग्रस्त एक घर का बारीक चित्रण है ।

अकाल के प्रभाव से घर में कुछ भी अनाज नहीं था । इस कारण कई दिनों तक खाना पकाने कोई चूल्हा नहीं जलाता और दाना पीसने कोई चक्की के पास नहीं आता । यानी इनका कोई काम नहीं है । इसलिए दोनों अपनी निर्जीव हालत पर दुखी रही । घर में खाना मिलने पर ही उसका छोटा हिस्सा घर की कानी कुतिया को भी मिलता है । पर यहाँ कानी कुतिया पिछले कुछ दिनों से खाना न मिलने की निराशा से चूल्हा और चक्की के पास सोई थी । भूख मिटाने केलिए कुछ मिलने की तलाश में छिपकलियाँ दीवार पर इधर-उधर घूम रही थीं । दीपक हों तो उन्हें पतंग मिलते, लेकिन दीपक जलाने केलिए तेल कहाँ ? भोजन न मिलने से चूहों की हालत भी बहुत शोचनीय थी, दाने की तलाश में वे हार गए हैं । क्योंकि घर में खाना बनने पर ही उन्हें भी खाने केलिए कुछ मिलता है । अकाल का असर केवल मनुष्यों को ही नहीं अन्य जीव-जंतुओं पर भी पडता है । यहाँ कवि ने साधारण किसान की भूख और बेचैनी को व्यंग्यात्मक शैली में वर्णित किया है ।

कवि नागार्जुन ने एक भी मानव पात्र को प्रस्तुत न करके अन्य जीव-जंतुओं और निर्जीव पदार्थों के ज़रिए घर की बुरी हालत का चित्रण अच्छी तरह किया है । कविता में अकाल ग्रस्त घर के माहौल को प्रस्तुत करने में कवि सफल हुए हैं । सरल भाषा में लिखी यह कविता बिलकुल अच्छी और प्रासंगिक है ।

2. कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास

‘ चूल्हे का रोना ’ और ‘ चक्की का उदास होना ’– इसका मतलब क्या है ?

अकाल के कारण घर में दाना नहीं था । इसलिए खाना पकाने कोई चूल्हा नहीं जलाता और दाना पीसने कोई चक्की के पास नहीं आता । इस कारण दोनों अपनी निर्जीव हालत पर दुखी रही ।

3. कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त - ये पंक्तियाँ किस हालत की ओर इशारा करती है ?

यहाँ कवि अकाल की भीषणता की स्थिति का वर्णन करते हैं । अकाल से घर की हालत दयनीय बन गई है । अकाल की तीव्रता के कारण छिपकली, चूहा जैसे जीवों को भी खाने केलिए कुछ नहीं मिलता है ।

4. कानी कुतिया कहाँ सोई हुई थी ? क्यों ?

कानी कुतिया उदास होकर चूल्हा और चक्की के पास सोई हुई थी । क्योंकि उसे कहीं से खाने को कुछ मिलने की संभावना नहीं थी ।

5. छिपकलियाँ भीत पर गश्त क्यों लगा रही थीं ?

अकाल के कारण घर की हालत इतनी बुरी थी कि किसीकेलिए खाना नहीं था। इसलिए कीडों को न मिलने से यानी भूख से परेशान होकर छिपकलियाँ दीवार पर इधर-उधर चलती थीं। दीपक हों तो उन्हें पतंग मिलते, लेकिन दीपक जलाने केलिए तेल कहाँ ?

6. अकाल में चूहों की क्या हालत हो गई ?

भोजन न मिलने से अकाल में चूहों की हालत भी बहुत शोचनीय बन गयी, दाने की तलाश में वे हार गए हैं ।

PART - 2 (दाने आए ------------- कई दिनों के बाद)

1. कवितांश का आशय

अकाल और उसके बाद कविता के प्रस्तुत अंश में कवि नागार्जुन ने अनेक बिंबों और प्रतीकों से सजाकर अकाल के बाद की खुशहाली का वर्णन किया है ।

अकाल के दिन बीत जाने से घर की हालत एकदम बदल गयी । घर में कई दिनों के बाद दाने अए । घरवालों ने चूल्हा जलाया और आँगन से ऊपर धुआँ उठने लगा । घर के अंदर के चूल्हा,चक्की जैसे निर्जीव वस्तुओं और सभी जीव जंतुओं की आँखें नए जीवन आने की खुशी में चमक उठीं । घर से

खाने की बाकी चीज़ें बाहर फेंकने पर उसे चुगकर तेज़ी से उड जाने की तैयारी में कौए ने अपनी पाँखें खुजलाईं । यानी कौए भी नई आशा के साथ आगे बढने केलिए तैयार हो उठते हैं । अकाल के दिन खतम होने पर घर के अंदर दाना आने से मनुष्यों के साथ सभी जीव-जंतु संतुष्ट हो जाते हैं ।

यहाँ कई दिनों के बाद फिर सबके मन में आई खुशी का,घर की बदली हालत का वर्णन सरल शब्दों में किया है । अकाल के बाद की खुशहाली की ओर सबका ध्यान आकर्षित करनेवाली यह कविता की प्रासंगिकता सार्वकालिक है ।

2. ' चमक उठीं घर भर की आँखें '– इसका मतलब क्या है ?

अकाल के दिन बीत जाने पर कई दिनों के बाद घर में अनाज आने से खाना पकाया गया । इसलिए घर के अंदर के चूल्हा, चक्की जैसे निर्जीव वस्तुओं और सभी जीव जंतुओं की आँखें नए जीवन आने की खुशी में चमक उठीं ।

3. कौआ अपनी पाँखें खुजलाने का कारण क्या है ?

अकाल के बाद घर में खाना पकाया गया । इसलिए घर से खाने की बाकी चीज़ें बाहर फेंकने पर उसे चुगकर तेज़ी से उड जाने की तैयारी में कौआ अपनी पाँखें खुजलाया होगा । यानी कौए भी नई आशा के साथ आगे बढने केलिए तैयार हो उठते हैं ।

4. दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद
धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद - इन पंक्तियों से कवि क्या कहना चाहते हैं ?

कवि ने यहाँ अकाल के बाद की स्थिति का वर्णन किया है । अकाल के बाद घर में दाने आने पर घर के आँगन से ऊपर धुआँ उठता है । अर्थात् चूल्हा जलने लगा है । यह घर में खाने पकाने की ओर इशारा करता है । अकाल की भीषण हालत अब बदल गई है ।

7. ठाकुर का कुआँ **PART - 1** (जोखू ने लोटा मुँह से लगाया तो ------------- उसने वह बदबूदार पानी पीने को न दिया ।)

1. खराब पानी पीने से बीमारी बढ जाएगी ।– पानी के खराब होने के क्या–क्या कारण हो सकते हैं ?

कूडे कचरों से पानी गंदा होता है । कुआँ साफ न होगा तो पानी गंदा होगा । कुएँ में जानवरों के मरने से पानी गंदा होगा ।

2. ' ठाकुर के कुएँ पर कौन चढने देगा ? ' गंगी क्यों इस प्रकार सोचती है ?

गंगी चमार जाति की है । वर्ण व्यवस्था के अनुसार वह अछूत थी । उनकी छाया तक ऊँच जाति अपवित्र मानी जाती थी । इसलिए गंगी ठाकुर के कुएँ के पास नहीं जा सकती ।

3. गंगी नहीं जानती थी कि पानी को उबाल देने से उसकी खराबी जाती रहती है । - यहाँ किस सामाजिक वास्तविकता प्रकट होती है ?

यहाँ गंगी की अशिक्षित हालत का संकेत है । निम्नजाति के लोग शिक्षा से वंचित रह जाते हैं । इसलिए उनमें अनजानी, अंधविश्वास आदि भी देखे जाते हैं । जाति के नाम पर किसीसे शिक्षा मिलने का अपना अधिकार छीनना उचित नहीं है ।

4. ' मगर दूसरा पानी आवे कहाँ से ? '- यहाँ जोखू की किस की ओर संकेत है ?

जोखू निम्नजाति में जन्मा था । उस समय जातिप्रथा ज़ोरों में था । निम्नजाति के लोगों को उच्च जाति के लोगों के कुएँ से पानी लेने का अधिकार नहीं था । पीने का पानी तक उन्हें निषेध था ।

5. ' क्या एक लोटा पानी न भरने देंगे '- गंगी के इस कथन पर अपना विचार लिखें ।

अछूत होने के कारण गंगी को कुएँ से साफ पानी भरने का भी हक नहीं है । सभी अधिकार समाज में उच्च माननेवालों के पास है । गंगी को समझ में नहीं आती कि लोग कैसे श्रेष्ठ बनते हैं । यहाँ समाज की असमानता के विरुद्ध गंगी का आक्रोश ही प्रकट होता है ।

6. जोखू ने पूछा - पानी कहाँ से लाएगी ? – इस शंका के क्या-क्या कारण हैं ?

जोखू के गाँव में उच्च जातिवाले ठाकुर और साहू के दो कुएँ हैं । निम्न जाति के लोगों के कुएँ का पानी खराब हो गया था । निम्नजातिवाले लोगों को ठाकुर और साहू के कुएँ से पानी लेने की अनुमति नहीं है । इसलिए जोखू ने गंगी से ऐसा कहा ।

7. पटकथा (शुरुआत भाग)

स्थान – एक झोंपडी का भीतरी भाग ।
समय – दोपहर के दो बजे ।
पात्र – गंगी और जोखू । (गंगी 40 औरत, धोती और चोली पहनी है । जोखू 50 का आदमी, धोती और बनियन पहना है ।)
दृश्य का विवरण – प्यास से परेशान होकर जोखू कमरे की पलंग पर बैठा है । उसको गंगी पीने केलिए लोटे में पानी देती है ।

संवाद –

जोखू – बहुत प्यास लग रही है । थोडा पानी लाओ ।
गंगी – अभी लाती हूँ ।
जोखू – यह कैसा पानी है ? तू यह पानी कहाँ से लायी ?
गंगी – गाँव के कुएँ से । कल ही लायी हूँ । क्या हुआ ?
जोखू – मारे प्यास के पिया नहीं जाता । गला सूखा जा रहा है और तू सडा पानी पिलाए देती है !
गंगी – (लोटा नाक से लगाते हुए) हाँ बदबू है । मगर कैसे ? कल लाते समय बदबू नहीं थी । कोई जानवर कुएँ में गिरकर मरा होगा ।
जोखू – प्यास सह नहीं पाता । ला, थोडा पानी, नाक बंद करके पी लूँ ।
गंगी – मैं नहीं दूँगी, खराब पानी से आपकी बीमारी बढ जाएगी । मैं कहीं से दूसरा पानी लाकर देती हूँ । आप लेट जाइए ।
जोखू – दूसरा पानी ! कहाँ से लाएगी ?
गंगी – ठाकुर और साहू के दो कुएँ तो हैं, क्या एक लोटा पानी न भरने न देंगे ?
जोखू – हाथ–पाँव तुडवा आएगी । बैठ चुपके से ।
गंगी – आप चिंता मत कीजिए । मुझे पता है क्या करना है ।
जोखू – ठीक है । तुम्हारी मर्ज़ी । जल्दी वापस आना ।

(मन में साहस भरकर गंगी रस्सी और घडा लेकर ठाकुर के कुएँ की ओर निकल जाती है ।)

SREEJITH R, KOVOOR VAKKALA, SOR.YS

PART - 2 (रात के नौ बजे थे । ------------- परंतु घमंड यह कि हम ऊँचे हैं !)

1. मैदानी बहादुरी का तो अब न ज़माना रहा है, न मौका ।– इसका क्या मतलब है ?

पुराने ज़माने में उच्च वर्ग के लोग अपनी शक्ति के सहारे गरीबों का शोषण करते थे । आज के बदलते ज़माने में कानून को मान्यता मिली है । लेकिन संपन्न वर्ग के लोग रिश्वत और शिफारिश के सहारे कानून को भी वश में कर लिए हैं ।

2. रिवाज़ी पाबंदियों और मजबूरियों पर गंगी का दिल विद्रोह करता है । क्या आप इसका समर्थन करते हैं ? क्यों ?

पानी प्रकृति का अनमोल वरदान है । इसपर सबका समान अधिकार है । पानी भरने से कुछ लोगों को मना करना बिलकुल अन्याय है । इसके विरुद्ध विद्रोह करना ही उचित है ।

3. ‘हम क्यों नीच हैं और ये लोग क्यों ऊँच हैं ? ’- गंगी के इस विचार पर आपका मत क्या है ?

समाज में व्याप्त जाति भेद पर गंगी का आक्रोश यहाँ प्रकट है । उच्च वर्ग के ठाकुर, साहू आदि बडे अन्याय करते हैं । लेकिन उनका सब कहीं आदर होता है । अछूत असहाय होकर अत्याचार के शिकार हो रहे हैं । यह हालत तो बदल जाना ही होगा । जन्म के आधार पर किसीको नीच मानना निंदनीय अपराध है । ऊँच-नीच की भावनाओं को तोडकर एक मन से करने से ही सामाजिक उन्नति संभव है । जाति भेद मानवता व ईश्वर के प्रति अपराध है ।

4. गंगी का विद्रोही दिल रिवाज़ी पाबंदियों और मजबूरियों पर चोटें करने लगा । - यहाँ प्रस्तुत रिवाज़ी पाबंदी और मज़बूरी क्या है ?

जाति के नाम पर समाज में बडा भेदभाव था । निम्न कहे जानेवाले लोगों से छुआ पानी पीना, भोजन खाना, कुएँ से पानी भरना, रास्ते में उनसे मिलना आदि बातों को पाबंदी थी । निम्न वर्ग के लोग ये सब सहकर जीने को विवश थे । उच्च वर्ग के लोगों के हितानुसार अपनी ज़िंदगी की प्राथमिकताओं की तय करने केलिए भी वे विवश थे ।

5. यह प्रसंग किस सामाजिक व्यवस्था की ओर संकेत किया है ?

यह प्रसंग जातीय असमानता की समस्या की ओर संकेत करता है । मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है । जाति के नाम पर लोगों को उच्च और निम्न मानना अन्याय है । जातीय असमानता एक सामाजिक अभिशाप है ।यह सामाजिक विकास में बडा बाधा उत्पन्न करती है । सभी लोगों को अच्छी शिक्षा मिलने पर एक हद तक यह समस्या दूर हो जाएगी । लेकिन आज भी हमारे देश में जाति के नाम पर हमले होते हैं, हत्या तक होती है । मुंशी प्रेमचंद अपनी कहानी ठाकुर का कुआँ में गंगी नामक पात्र के द्वारा जातीय असमानता के खिलाफ अपना विचार प्रस्तुत करते हैं ।

6. टिप्पणी – जाति भेद एक अभिशाप है

हमारे समाज में जाति भेद एक बडी समस्या है । आदमी जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है । जाति के नाम पर मनुष्य को अलग-अलग विभागों में बाँटना अभिशाप है । उच्च जाति के लोग निम्न जाति के लोग से कठिन मेहनत करवाते हैं । लेकिन उसे उचित वेतन नहीं देता है । सार्वजनिक कुएँ से पानी भरना, इष्ट भोजन खाना, आवश्यक वस्त्र पहनना, मंदिर में प्रवेश करना आदि को उन्हें नहीं मिलता है । उनके बच्चों को स्कूल में जाकर पढने का अवकाश तक नहीं है । निम्न कहे जानेवाले लोगों से छुआ पानी पीना, भोजन खाना, कुएँ से पानी भरना, रास्ते में उनसे मिलना आदि बातों में पाबंदी थी । निम्न वर्ग के लोग ये सब सहकर जीने को विवश थे । उच्च वर्ग के लोगों के हितानुसार अपनी ज़िंदगी की प्राथमिकताओं को तय करने केलिए भी वे विवश थे । इन भेदभावों से मुक्ति आवश्यक है । जाति प्रथा को इस समाज से नहीं इस देश से दूर करना चाहिए । इससे ही समाज की तथा देश की भलाई होती है ।

7. पोस्टर (संगोष्ठी) – जातिप्रथा एक अभिशाप है

सरकारी जी एच एस एस, कोल्लम

संगोष्ठी

विषय - जातिप्रथा एक अभिशाप है

आयोजन – हिंदी मंच

2018 जनवरी 18, गुरुवार को
सुबह 10 बजे, स्कूल सभा भवन में

उद्घाटन – शिक्षा मंत्री, केरल

प्रस्तुति - हिंदी अध्यापक

जातिप्रथा समाज का अभिशाप है ...
इसे रोको ... समाज को सुधारो ... ।

भाग लें... लाभ उठाएँ...

सबका स्वागत

8. **पोस्टर (points) संदेश – जातिप्रथा एक अभिशाप है**

1. मानव–मानव के बीच जाति भेद न करें ...
   जातीय असमानता सामाजिक अपराध, इसे खतम करें ।
2. छुआछूत दूर करो ...
   समाज की उन्नति पाओ ।
3. नीच कुल में जन्म लेना व्यक्ति का अपना दोष नहीं ...
   जन्म के आधार पर नीच जाति मानना निंदनीय अपराध ।
4. सभी मानव समान ...
   जाति न देखो, कर्म देखो ।
5. एक देश, एक जाति, एक धर्म
   जाति ने नाम पर अत्याचार न करें ।
6. मनुष्य को जाति के नाम पर नहीं मनुष्य की तरह जानो ...
   याद दें ... आपत्ति, संकट पर कोई जाति नहीं होती ।
7. धरती पर सभी का हक एक जैसा
   जाति के नाम पर किसीसे यह अधिकार मत छीनो ।
8. करो रोकथाम जातिप्रता का ...
   अपनेलिए ... मनुष्यता केलिए ...
9. जातीय असमानता संविधान के खिलाफ ...
   इसे मिटाओ ... सभी मानवों को समान मानो ।

विश्व जातिगत भेदभाव विरुद्ध दिवस – मार्च 21

PART - 3 (कुएँ पर किसी के आने की आहट हुई ----------- अनुभव उसे पहले कभी न हुआ था ।)

1. गंगी दबे पाँव कुएँ की जगत पर चढी, विजय का ऐसा अनुभव उसे पहले न हुआ था । – गंगी को ऐसा अनुभव क्यों हुआ होगा ?

अछूत होने के कारण गंगी ठाकुर के कुएँ के पास नहीं जा सकती । रात की निर्जन हालत में सही, गंगी जीवन में पहली बार ठाकुर के कुएँ की जगत पर चढी, इससे उसको गर्व का अनुभव हुआ होगा ।

2. वार्तालाप (दो औरतें कुएँ से पानी भरने आयीं)

पहली औरत - (जलन के साथ) देखो दीदी, ये मर्द लोग कितने बुरे हैं ।

दूसरी औरत - ठीक कहा तुमने । खाना खाने बैठते ही हुकम चलाया कि कुएँ से ताज़ा पानी भर लाओ । घडे केलिए पैसे नहीं है ।

पहली औरत - (गुस्से में) हमें आराम से बैठे देखकर मरदों को जलन होती है ।

दूसरी औरत - हाँ, ये लोग एक कलसिया भर पानी भरकर नहीं आते। बस हुकम चला दिया कि ताज़ा पानी भर लाओ, जैसे हम लौडियाँ ही तो हैं ।

पहली औरत - लौडियाँ नहीं तो और क्या हो तुम ? रोटी-कपडा नहीं मिलती क्या ? दस-पाँच रुपए भी छीन-झपटकर लेती हो न ? और क्या चाहिए तुम्हें ?

दूसरी औरत - मत लजाओ दीदी ! छिन्न भर आराम करने को मन बहुत तरसता है । इतना काम और कहीं करें तो इससे आराम मिलती । यहाँ काम करते हुए मर जाने पर भी किसीके चेहरे पर खुशी नहीं दिखता ।

पहली औरत - तुम सच कहती हो दीदी, ये लोग हमें नौकर समझकर रखे हैं ।

दूसरी औरत - ज़रूर । अब हम लौट चलें । वे हमें बुला रहे होंगे ।

पहली औरत - ठीक है । जल्दी चलिए ।

PART - 4 (उसने रस्सी का फंदा ---------- वही मैला-गंदा पानी पी रहा है ।)

1. शेर का मुँह इससे अधिक भयानक न होगा । यहाँ ठाकुर के दरवाज़े की तुलना शेर की मुँह से क्यों की गई है ?

शेर एक खूँखार जानवर है । उसके सामने से बच जाना मुश्किल है, पर असंभव नहीं । पर ठाकुर जैसे उच्च वर्ग के लोग शेर से भी अधिक क्रूर है । एक अछूत को कुएँ से पानी भरते देखें तो उसे जरूर मार ही डालेगा । गंगी यह बात अच्छी तरह से जानती थी । इसलिए जब ठाकुर का दरवाज़ा एकाएक खुलता है तो अत्यंत डर जाने से वह ऐसा सोचती है ।

2. जोखू ने गंदा पानी पीने का निश्चय क्यों किया ?

जोखू को मालूम था कि ठाकुर और साहू के कुएँ से पानी लेना आसानी की बात नहीं है । उसकी राय में ठाकुर लाठी मारेंगे और साहूजी एक के पाँच लेंगे । इस कारण से ही उसने गंदा पानी पीने का निश्चय किया ।

3. गंगी और जोखू के बीच हुए वार्तालाप (ठाकुर के कुएँ से वापस घर आने पर)

गंगी – अरे ! आप यह क्या कर रहे हैं ?

जोखू – फिर मैं क्या करूँ ? प्यास के मारे गला सूख गया है ।

गंगी – लेकिन वह बदबूदार पानी है न ? आप की बीमारी बढ जाएगी तो ?

जोखू – और मैं क्या करूँ ? तू साफ पानी लाने गई थी न ? मिल गया ?

गंगी – नहीं ।

जोखू – फिर इतनी देर तक कहाँ थी ?

गंगी – मैं ठाकुर के कुएँ से पानी ले रही थी ।

जोखू – फिर क्या हुआ ?

गंगी – इसी बीच ठाकुर ने मुझे देखा और मैं जान बचाकर भाग गयी ।

जोखू – मैंने पहले ही कहा था न ?

गंगी – अब क्या होगा ? भगवान ही जाने !

जोखू – ठीक है । अब लेटकर सो जाओ ।

4. गंगी की डायरी (ठाकुर के कुएँ से वापस घर आने पर)

तारीख : ....

आज का यह बुरा दिन मैं कैसे भूलूँ ? प्यास के मारे मेरे बीमार पति को शुद्ध पानी दे न पाई । आज उनके पूछने पर मैंने जो पानी दिया उससे बदबू आ रही थी । इसलिए मैंने उन्हें वह पानी पीने नहीं दिया । उनकेलिए साफ पानी लाने केलिए मैं रात के अंधेरे में रस्सी और घडा लेकर ठाकुर के कुएँ की ओर निकल पडी । मैं घडे में रस्सी डालकर पानी खींच रही थी, अचानक ठाकुर दरवाज़ा खोलकर बाहर आए । मैं जल्दी घडा, रस्सी सब छोडकर वहाँ से भाग गयी । यदि पकड लिया तो ... । घर पहुँचकर मैंने देखा, मेरे पति वही गंदा पानी पी रहे हैं । अब मैं उन्हें कैसे मना करूँ ? हे भगवान ! हमारी यह बुरी हालत कब बदलेगी ?

5. टिप्पणी - गंगी की चरित्रगत विशेषताएँ

गंगी मुंशी प्रेमचंद की मशहूर कहानी ' ठाकुर का कुआँ ' की नायिका है । वह निम्नजाति की मानी जाती है । उसके पति जोखू बीमार है । पीने केलिए पति को साफ पानी दे न पाने से वह परेशान होती है । ठाकुर के कुएँ से पानी लेने जाने पर जोखू उसे डाँटता है । लेकिन वह पीछे मुडनेवाली नहीं थी । रात को चुपके –चुपके वह ठाकुर के कुएँ से पानी लाने जाती है । अत्यधिक सावधानी से पानी लेते समय ठाकुर का दरवाज़ा खुलता है और गंगी वहाँ से बच जाती है । उसका विद्रोही दिल रिवाज़ी पाबंदियों पर चोटें करता है । वह अपने पति से बहुत प्यार करती है । वह जानती थी कि गंदा पानी पीने से बीमारी बढ जाएगी । लेकिन बेचारी अनपढ गंगी यह नहीं जानती थी कि पानी को उबालने से उसकी खराबी दूर होती है । इस प्रकार गंगी में एक गरीब, असहाय और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ विद्रोह करनेवाली स्त्री को हम देख सकते हैं ।

8. बसंत मेरे गाँव का   **PART - 1** (मकर संक्रंति के बाद सूरज .... बसंत में संगीत का सुर घुल जाते हैं ।)

1. बच्चे फूलदेई त्योहार कैसे मनाते हैं ?

बच्चे शाम तक फूल चुनते हैं । उन्हें बिना मुरझाए सुरक्षित रखते हैं । सबेरे वे गाँव भर घूमते हैं । इन फूलों से घरों की देहरियाँ सजाते हैं । लोग उन्हें चावल, गुड, दाल आदि दक्षिणा के रूप में देते हैं । इक्कीस दिन तक यह क्रम रहता है । अंतिम दिन इकट्ठी सामग्री से सामूहिक भोज बनाया जाता है ।

2. उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में फूलदेई को बच्चों को सबसे बडा त्यौहार मानते हैं । क्यों ?

फूलदेई त्यौहार से जुडे फूल चुनने से लेकर सामूहिक भोज बनाने तक के सारे काम बच्चे करते हैं । इस त्यौहार के आयोजन में बडों की भूमिका केवल सलाह देने तक सीमित रहती है । इसलिए फूलदेई को उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में बच्चों के बडे त्यौहार मानते हैं ।

3. मित्र के नाम पर अपना पत्र (फूलदेई त्यौहार का वर्णन)

स्थान : ....

प्रिय मित्र,

तारीख : ....

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । हमारी अध्यापिका ने पिछली कक्षा में पढाए उत्तराखंड के एक प्रमुख त्योहार फूलदेई की विशेषताएँ मैं तुमसे बाँटना चाहता हूँ ।

फूलदेई बसंत ऋतु में उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में मनाये जानेवाले बच्चों का बडा त्योहार है । इक्कीस दिन के इस त्योहार में बच्चे सुबह से शाम तक तरह-तरह के फूल चुन लेते हैं । इन फूलों को रिंगाल की टोकरियों में रखकर सुबह तक मुरझा न पाने केलिए रात भर पानी से भरे गागरों के ऊपर रखा जाता है । सुबह होते ही बच्चों की टोलियाँ गाँव भर में घूमती हैं और इन फूलों से घरों की देहरियाँ सजाए जाते हैं । उन घरवाले बच्चों को दक्षिणा के रूप में चावल,गुड,दाल आदि देते हैं । इक्कीस दिन तक इकट्ठी की जाती इन चीज़ों से अंतिम दिन सामूहिक भोज बनाया जाता है । इस त्योहार से जुडे हुए सारे काम बच्चे ही करते हैं । इस आयोजन में बडों की भूमिका केवल सलाह देने तक सीमित होती है ।

इस त्योहार के बारे में पढने के बाद मुझे भी वहाँ जाकर इसे देखने का मन हो रहा है । क्या तुम भी आओगे मेरे साथ ? वहाँ तुम्हारी खबर क्या-क्या हैं ? माँ-बाप से मेरा पूछताछ कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में,
नाम
पता ।

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

4. पोस्टर – फूलदेई समारोह

उत्तराखंड कला समिति के नेतृत्व में

सामूहिक फूलदेई त्योहार

2019 मार्च 22, शुक्रवार को देहरादूर गाँव में
सुबह 8 बजे से रात 12 बजे तक

उद्घाटन - महापौर

- फूलों की प्रदर्शनी
- लोकगीत प्रस्तुति
- सामूहिक भोज
- गरीबों केलिए कपडा वितरण

सबका हार्दिक स्वागत

PART - 2 (बसंत की गुनगुनी धूप .... ऋतुओं के बदलने का उल्लास बना रहेगा ।)

1. ' आपसी विश्वास के दम पर बर्षों से यहाँ लेन–देन चल रहा है ।'– यहाँ गाँववालों की कौन–सी विशेषता प्रकट होती है ?

उत्तराखंड के हिमालयी अंचल के गाँववाले सीधे–सादे और ईमानदार हैं । वे किसीको धोखा देना नहीं चाहते हैं । वे पशुचारक के साथ जो नकद–उधार करते हैं, उसका कोई आंकडे कहीं दर्ज नहीं करते । वे आपसी विश्वास को बडा मोल देते हैं ।

2. ' जब तक हिमालय रहेगा ऋतुओं के बदलने का उल्लास बना रहेगा ।'- इसका क्या तात्पर्य है ?

हमारे देश के ऋतु चक्र का आधार हिमालय है । बसंत, गर्मी, सर्दी, वर्षा आदि बारी–बारी आने का कारण हिमालय है ।

3. रपट (पशुचारक और गाँववालों के बीच का लेन-देन)

आपसी विश्वास के दम पर सदियों से व्यापार

स्थान : ...... उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में बसते पशुचारकों और गाँववालों के बीच आपसी विश्वास के बल पर सदियों से लेन-देन हो रहा है । सर्दी बढने पर जानवरों के साथ निचले इलाकों में उतरे पशुचारक गर्मी होने पर वापस अपने घर लौटते हैं । इस समय रास्ते में आनेवाले गाँवों से उनका लेन-देन चलता है । वे जानवरों के साथ -साथ दुर्लभ हिमालयी जडी और औषधियाँ भी बेचते हैं । इन गाँवों से उनका सदियों का रिश्ता है, इसलिए उसी समय पूरी कीमत चुकाने की ज़रूरत नहीं होती । वर्फीले मौसम में फिर निचले इलाकों में जाते वक्त पुरानी वसूली की जाती है । मज़े की बात है कि नकद-उधार के आंकडे कहीं दर्ज़ नहीं होते । केवल आपसी विश्वास के दम पर चलते यह व्यापार बिलकुल अलग ही है ।

4. पटकथा – पशुचारक और गाँववालों के बीच का लेन-देन

स्थान - गाँव की एक सडक के किनारे ।
समय - शाम के छे बजे ।
पात्र - पशुचारक और गाँववाला ।

घटना का विवरण - पशुचारक जानवरों के साथ औषधियाँ लेकर वापस अपने घर लौटते वक्त रास्ते में एक गाँववाले से उसकी मुलाकाल होती है ।

SREENIVAR KOVOOR VARKALA SCRIPS

संवाद –

पशुचारक – नमस्ते भैया, क्या चाहिए आपको ?

गाँववाला – मुझे कुछ जडी-बूटियाँ चाहिए ।

पशुचारक – बताइए क्या-क्या चाहिए ? हमारे पास कीडाजडी, करण और चुरु हैं ।

गाँववाला – मुझे थोडा-सा कीडाजडी और चुरु चाहिए ।

पशुचारक – इतनी तो बाकी पडी है । यह तो 120 रुपए का है ।

गाँववाला – अब मेरे पास 100 रुपए ही हैं ।

पशुचारक – कोई बात नहीं, अगले साल बाकी दीजिए ।

गाँववाला – ठीक है । यह 100 रुपए ले लो, बाकी 20 रुपए अगले साल दे दूँगा ।

(जानवरों को लेकर पशुचारक आगे बढ जाते हैं ।)

5. पोस्टर (संदेश) points – प्रकृति और मनुष्य के आपसी संबंध

1. प्रकृति हमारी माँ, हम सबकी जान...
   करो इसका सम्मान,प्रकृति की रक्षा हमारी सुरक्षा ।
2. मनुष्य और प्रकृति का संबंध अटूट...
   प्रकृति नहीं है तो मानव भी नहीं ।
3. प्राकृतिक वस्तुओं का शोषण कम करो...
   प्राकृतिक दुर्घटनाओं से रक्षा पाओ ।
4. स्वच्छ प्रकृति स्वस्थ जीवन का आधार...
   प्रकृति के बिना मनुष्य का अस्तित्व नहीं ।
5. पहाडियों को गिराना, जंगल-पेडों की कटाई,
   जलस्रोतों व खेतों को मिटाना आदि बंद करो...
   प्रकृति का संतुलन कायम रखो ।
6. प्रकृति को संभालो...
   हमारेलिए... आगामी पीढी केलिए... ।

विश्व पर्यावरण दिवस – जून 5

9. दिशाहीन दिशा **PART - 1** (घर में चलते समय मन में यात्रा की .... अंतिम पडाव कन्याकुमारी हो ... ।)

1. गोआ की ज़िंदगी बहुत सस्ती है । लेखक के इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं ?

लेखक के इस कथन से मैं सहमत हूँ । गोआ में रहने-खाने की हर सुविधा बहुत थोडे पैसों में प्राप्त होने से वहाँ जीवन सस्ता है ।

2. " घर में चलते समय मन में यात्रा की कोई बनी हुई रूप–रेखा नहीं थी । "– लेखक के इस कथन के आधार पर बताएँ कि किसी यात्रा पर जाने से पहले यात्रा की रूप–रेखा बनाना ज़रूरी है ?

किसी यात्रा केलिए जाने से पहले रूप–रेखा बनाना ज़रूरी है । क्योंकि कहाँ जाना है, कितने दिन रुकना है, क्या–क्या देखना है इन सबकी रूप–रेखा पहले ही तैयार नहीं की तो हम अपनी रुचि के अनुसार सब कुछ देख नहीं पाएँगे ।

3. घने शहर की छोटी–सी तंग गली में पैदा हुए लेखक को कन्याकुमारी के समुद्र–तट के प्रति आत्मीयता का अनुभव होने का आधार क्या हो सकता है ?

लेखक का जन्म शहर की छोटी–सी तंग गली होने से उनके मन में विपरीत के प्रति आकर्षण हो सकता है । छोटी गली में पैदा होने के कारण विशाल समुद्र–तट के प्रति आकर्षण होना स्वाभाविक ही है ।

4. लेखक की डायरी (लेखक ने यात्रा करने का निश्चय किया)

तारीख : ....

यात्रा करने की आशा थी । समुद्र–तट की यात्रा बहुत अच्छी है । बहुत बार सोचा था कि ऐसा एक यात्रा पर जाऊँ । लेकिन समय और साधन पास नहीं होते थे । अब इसका अवसर आ गया है । नौकरी छोडने दी तो कुछ पैसे मिले । उन पैसों से यात्रा करने का निश्चय किया । लेकिन कहाँ जाना है, क्या–क्या देखना है इन सबकी कोई रूप–रेखा ही नहीं तैयार की । पहले कन्याकुमारी जाने को सोचा था । वहाँ से गोआ या बंबई । मित्रों की भी विभिन्न रायें हैं । निर्णय तो लेना ही चाहिए ।

PART – 2 (दिसंबर सन् बावन की पच्चीस तारीख । .... मुद्दत हुई है यार को मेहमाँ किए हुए ...।")

1. अविनाश ने अपना कोट उतारकर मल्लाह को दे दिया । इसकेलिए क्या–क्या कारण हैं ?

सर्दी बढ रही थी पर मल्लाह के पास चादर नहीं था । अविनाश कुछ समय और झील का सैर करना चाहता था ।

2. ' मगर बात करने की जगह उसने मेरा बिस्तर लपेटकर खिडकी से बाहर फेंक दिया और खुद मेरा सूटकेस लिए हुए नीचे उतर गया । ' अविनाश के इस आचरण से मोहन राकेश और अविनाश के बीच की मित्रता का क्या अंदाज़ा मिल जाता है ?

इससे पता चलता है कि अविनाश और मोहन राकेश के बीच घनिष्ठ मित्रता है । अविनाश चाहता है कि उस दिन राकेश जी अपने साथ रहे । लेखक के बारे में निर्णय लेने का पूर्ण स्वतंत्रता अविनाश को था ।

3.'मगर आप चाहें तो चंद गज़लें तरन्नुम के साथ अर्ज कर सकता हूँ।' इस कथन से आम जनता के साथ गज़लों के रिश्ते का क्या परिचय मिलता है?

गज़लों के प्रति आम जनता का लगाव ही यहाँ प्रकट होता है ।

4. ' उसके खामोश हो जाने से सारा वातावरण ही बदल गया । '– इससे आपने क्या समझा ?

गज़लों में मग्न रहने से बाहर की दुनिया से लेखक और मित्र कुछ समय केलिए अनजान थे । गज़ल रुकते ही वे बाहर का वातावरण यानी रात, सर्दी, नाव का हिलना और झील का विस्तार महसूस करने लगे । किसीमें मग्न होने से हम बाहर की बातों से अनजान रहना स्वाभाविक है ।

5. मल्लाह अब्दुल जब्बार की वेशभूषा कैसी थी ?

वह सिर्फ एक तहमद पहना था। उसकी दाढी और छाती के सारे बाल सफेद हो चुके थे।

6. मल्लाह अब्दुल जब्बार की चरित्रगत विशेषताओं पर टिप्पणी

मोहन राकेश के यात्रावृत्त दिशाहीन दिशा का पात्र है अब्दुल जब्बार नाम का एक बूढा मल्लाह। वह गरीब , परिश्रमी और सादा जीवन बितानेवाला व्यक्ति था। लेखक के मित्र का अनुरोध मानकर रात के ग्यारह बजे के बाद वह नाव लेकर आया। आधी रात के समय कडी सर्दी में वह केवल एक तहमद पहनकर नाव चलाया। उस शांत वातावरण में लेखक का मित्र गाना सुनना चाहे तो उसने नाव चलाते हुए एक के बाद एक करके अच्छे ग़ज़लें गाए। वह बडा विनयशील था। उसका स्वर काफी अच्छा था और सुनाने का अंदाज़ भी शायराना था। उसकी दाढी और छाती के सारे बाल सफेद हो चुके थे। बूढा होने पर भी पतवार चलाते समय उसकी मांसपेशियाँ इस तरह हिलती थीं जैसे उनमें फौलाद भरा हो। उसके गायन ने लेखक और मित्र के सैर को यादगार बना दिया।

7. वार्तालाप - नाव में ताल यात्रा करना

लेखक – आधी रात को बुलाने से आपको कोई तकलीफ हुई है क्या ?
मल्लाह – क्या तकलीफ है साब ? यही तो हमारा गुज़ारा है न ?
लेखक – आपका नाम क्या है ?
मल्लाह – जी, मेरा नाम अब्दुल जब्बार है।
लेखक – क्या आप इस ताल के पास ही रहते हो ?
मल्लाह – हाँ साब। मैं यहाँ पास ही रहता हूँ।
लेखक – सुना है, आप जैसे मल्लाह अच्छे गायक भी हैं। क्या आप हमारेलिए एक गाना गाएँगे ?
मल्लाह – मैं गा तो नहीं सकता, हुज़ूर।
लेखक – कोशिश तो करो यार। देखो कितना अच्छा नज़ारा है यह ! इस वक्त एक गाना भी हो तो मज़ा आता।
मल्लाह – आप चाहें तो चंद गज़लें तरन्नुम के साथ अर्ज कर सकता हूँ, माशा अल्लाह चुस्त गज़लें हैं।
लेखक – ज़रूर ज़रूर ! आपको जैसे आता है वैसा गाओ।
मल्लाह – ठीक है साब।

8. वार्तालाप – सर्दी बढने से मल्लाह लौटने के बारे में कहने पर

मल्लाह – अब हम लौट चलें साहब।
अविनाश - क्यों ? क्या हुआ ?
मल्लाह – सर्दी बढ रही है न ?
अविनाश - तो क्या ?
मल्लाह – जी,मैं अपनी चादर साथ नहीं लाया।
अविनाश - (कोट अतारकर उसकी तरफ बढाते हुए) लो, तुम यह पहन लो। अभी हम लौटकर नहीं चलेंगे।
मल्लाह - (कोट पहनते हुए) ठीक है साहब। यही तो काफी है।
अविनाश – तुम्हें घर जाने की कोई आवश्यकता है क्या ?
मल्लाह - नहीं साहब। आपकी सैर खतम होने पर ही मैं जाऊँगा।
अविनाश – ऐसा हो तो तुम्हें कोई गालिब की चीज़ याद हो, तो सुनाओ।
मल्लाह - ज़रूर साहब।

9. मोहन राकेश की डायरी (नाव यात्रा)

तारीख: ....

आज मेरेलिए कैसा दिन था, बता नहीं सकता। आज मैं कन्याकुमारी की यात्रा में था। भोपाल स्टेशन पहुँचने पर मेरा मित्र मुझे मिलने आया और उसके साथ एक रात रहने का निश्चय किया। रात को ग्यारह के बाद हम घूमने निकले। झील के पास आते ही कुछ देर नाव लेकर झील की सैर करने की इच्छा हुई। एक नाव मिल गई। नाव में बैठे यात्रा का मज़ा लूट रहा था। तभी मित्र के अनुरोध पर मल्लाह ने हमारेलिए कुछ गज़लें सुनाईं। कितना मीठा था उनका स्वर। रात के साथ ठंड बढने लगी। लेकिन लौटने का मन नहीं हुआ। इसलिए मित्र ने अपना कोट उतारकर उसको दिया। कुछ देर फिर सैर की। चार बजे ही लौटे। आज की यह मज़ेदार नाव यात्रा मैं कैसे भूलूँ ?

10. लेखक का पत्र (भोपाल से लौटकर पर अपना मित्र अविनाश को शुक्रिया अदा करते हुए)

स्थान : ....
तारीख : ....

प्रिय मित्र,

नमस्ते। आप कैसे हैं ? आपके परिवार सब कैसे हैं ? मैं यहाँ ठीक हूँ। सकुशल मैं यहाँ पहुच गया।

मैं इस पत्र के द्वारा भोपाल की यात्रा के अनुभव के बारे में बताना चाहता हूँ। वास्तव में मेरा लक्ष्यस्थान भोपाल नहीं था। लेकिन आपने उसे बदल दिया। आप मेरा सूटकेस लेकर चले थे। मेरे सामने और कोई उपाय नहीं था, सिर्फ आपके साथ चलना था। आपके साथ बोपाल में घूमने का अनुभव विशेष आनंददायक था। भोपाल झील में उस बूढे मल्लाह की नाव में जो सैर हुई थी वह तो विशेष उल्लेखनीय थी। रात की उस बूढे मल्लाह के गायन का आस्वादन मैंने खूब किया था। मैं इन अच्छे अनुभवों केलिए आपके कृतज्ञ हूँ। बहुत धन्यवाद।

आपके परिवार को मेरा हैलो बोलना। आपसे फिर मिलने की प्रतीक्षा में,

आपका मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता।

10. बच्चे काम पर जा रहे हैं PART - 1 (कोहरे से ढँकी सडक पर बच्चे ------- काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे ?)

1. कवितांश का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के प्रमुख कवि श्री.राजेश जोशी की सुंदर कविता है बच्चे काम पर जा रहे हैं से ली गई हैं । इसमें कवि बाल मज़दूरी पर तीखा प्रहार करते हैं ।

कवि कहते हैं कि बडे सबेरे कोहरे से ढँकी सडक पर बच्चे काम करने केलिए जा रहे हैं । भूख और गरीबी के कारण कई बच्चों को काम पर जाना पडता है । यह हमारे समय की सबसे बडी समस्या है । क्योंकि यह उनको काम करने की उम्र ही नहीं है । यह इतनी भयानक समस्या है कि विवरण की तरह नहीं लिखा जा सकता । इसे एक सवाल की लिखना चाहिए । हमें चिंता करना है कि बच्चों के हँसने-खेलने की उम्र में उन्हें काम पर क्यों जाना पड रहा है ? कवि के अनुसार समस्याओं को सवालों की तरह लिखा जाने से आम जनता का ध्यान इस तरफ आकर्षित हो जाएगा । काम पर जानेवाले बच्चे सुरक्षित रहने व शिक्षा पाने के हकों से वंचित रह जाते हैं । आज के बच्चे कल के नागरिक हैं । इसलिए उनको बचपन में ही शारीरिक एवं मानसिक विकास का अवसर मिलना चाहिए । इस अभिशाप को जड से मिटाने हम सब मिलकर कोशिश करना पड़ेगा ।

समाज की एक बडी समस्या को कविता के द्वारा प्रस्तुत करने में कवि को पूर्ण सफलता मिली है । कविता की भाषा अत्यंत सरल एवं हमें चिंतित करने की प्रेरणा देनेवाली है ।

2. ' हमारे समय की सबसे भयानक पंक्ति है यह '- ऐसा क्यों कहा गया है ?

छोटी उम्र में ही बच्चों को काम पर भिजवाने को कवि आज के समय की सबसे भयानक समस्या बताते हैं । बच्चों से काम करवाना कानूनी अपराध है । फिर भी कई बच्चे अपने परिवार की भूख मिटाने केलिए काम पर जाने को मज़बूर हो रहे हैं । अत: यह देश की डरावनी स्थिति है । क्योंकि बचपन का समय उनके भविष्य निर्माण का है, न कि काम करने का ।

3. बातों को सवाल की तरह लिखा जाने से क्या फायदा है ?

छोटी उम्र में ही बच्चों को काम पर भिजवाने को कवि आज के समय की सबसे भयानक समस्या बताते हैं । इसलिए कवि इसे विवरण की तरह लिखना भयानक होने से सवाल की तरह लिखने की कोशिश करते हैं । बातों को सवालों की तरह लिखा जाने से आम जनता का ध्यान इस तरफ आकर्षित हो जाएगा । समस्या को प्रस्तुत करने में समाज की ओर समस्या उठाना ही सशक्त मार्ग है ।

4. बच्चे काम पर क्यों जाते होंगे ?

अकसर ऐसे बच्चे गरीब परिवार में जन्मे होंगे । अपनी आर्थिक कठिनाई उन्हें काम पर जाने को मज़बूर करते हैं । अनपढ माता –पिता बच्चों को काम पर भेजना पसंद करते हैं । कभी अनाथत्व के कारण, भूख सह न पाने से काम पर जाते होंगे ।

PART - 2 (क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं ------ सारे मदरसों की इमारतें)

1. कवितांश का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के प्रमुख कवि श्री.राजेश जोशी की सुंदर कविता बच्चे काम पर जा रहे हैं से ली गई हैं । इसमें कवि बाल मज़दूरी पर तीखा प्रहार करते हैं ।

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि अपनी आशंका प्रकट करते हुए पूछते हैं कि बच्चों के पढने-खेलने के उम्र में उन्हें काम पर क्यों जाना पड रहा है ? क्या इनके खेलने की सारी गेंदें अंतरिक्ष में गिर गई हैं ? क्या इनके पढने की सारी रंग-बिरंगी किताबों को दीमकों ने खा लिया है ? क्या इनके खेलने के सारे खिलौने काले पहाड के नीचे दब गए हैं ? क्या इनके पढने के सारे मदरसों की इमारतें किसी भूकंप में ढह गए हैं ? कवि हमारे सामने यह खतरनाक स्थिति पेश करते हैं कि भूख और गरीबी के कारण आज भी कुछ बच्चों को रंग-बिरंगी किताबें, गेंदें, खिलौने, स्कूली इमारतें, हँसी-खेल और पढाई का संसार छोडकर काम पर जाना पडता है । गरीब बच्चे अपनी और अपने घर की तकलीफों के कारण बचपन की खुशियाँ छोडकर काम पर जाते होंगे । इनकी समस्याओं को खतम करने का उत्तरदायित्व समाज पर है । गैर कानूनी होने पर भी बालश्रम आज भी संसार के कई देशों में चालू है । इसके विरुद्ध आवाज़ उठाने का आह्वान है यह कविता ।

समाज की एक बडी समस्या को कविता के द्वारा प्रस्तुत करने में कवि को पूर्ण सफलता मिली है । कविता की भाषा अत्यंत सरल एवं हमें चिंतित करने की प्रेरणा देनेवाली है ।

2. ' क्या किसी भूकंप में ढह गई हैं सारे मदरसों की इमारतें '– इन पंक्तियों द्वारा कवि क्या कहना चाहते हैं ?

बचपन मुख्य रूप से स्कूल में जाकर पढने का समय है । लेकिन काम पर जाने के कारण बच्चों की स्कूल जाने का अवसर नहीं मिल रहा है । इसलिए कवि आशंकित हैं कि उनके स्कूल भूकंप में पडकर ढह गए हैं ।

3. ' क्या काले पहाड के नीचे दब गए हैं सारे खिलौने '– इन पंक्तियों से कवि क्या कहना चाहते हैं ?

बचपन बच्चों केलिए खेलने का समय है । लेकिन बडे सबेरे ही काम पर जाने कारण उन्हें खेलने का समय नहीं मिलता है । इसलिए कवि आशंकित हैं कि उनके सारे खिलौने नष्ट कर दिए गए हैं ।

4. ' क्या दीमकों ने खा लिया है सारी रंग–बिरंगी किताबों को '–इन पंक्तियों से कवि क्या कहना चाहते हैं ?

जो उम्र बच्चों के पढने–लिखने की है उस समय में वे किताबों को छोडकर काम पर जा रहे हैं । इस तरह बच्चे शिक्षा से वंचित हो रहे हैं, पुस्तकों और पढाई के मनमोहक दुनिया से अलग हो रहे हैं । इसलिए कवि आशंकित हैं कि उनकी किताबों ने खा लिया होगा ।

5.' क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें '–इन पंक्तियों से कवि क्या कहना चाहते हैं ?

खेलने से बच्चों का मानसिक तथा शारीरिक विकास होता है । लेकिन आज बच्चों के पास खेलने का समय नहीं है ।

6. ' क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें '- कवि इससे क्या कहना चाहते हैं ?

गरीबी के कारण बच्चे स्कूल छोडकर, खेल छोडकर माँ-बाप के साथ काम पर जाते हैं । गेंद एक खिलौना है । बचपन की खुशी से वंचित बच्चों के बारे में कवि यहाँ कहते हैं ।

SREENITHA KOONOOR VARKALA, SCRIPTS

PART - 3 (क्या सारे मैदान, ------------- सारी चीज़ें हस्बमामूल)

1. कवितांश का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के प्रमुख कवि श्री.राजेश जोशी की सुंदर कविता बच्चे काम पर जा रहे हैं से ली गई हैं । इसमें कवि बाल मज़दूरी पर तीखा प्रहार करते हैं ।

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि अपनी आशंका प्रकट करते हुए पूछते हैं कि क्या बच्चों के खेलने के मैदान, घरों के आँगन और सारे बगीचे एकाएक खतम हो गए हैं ? अगर ऐसा है तो इस दुनीया में फिर बचा ही क्या है ? यह स्थिति बहुत भयानक है । कवि के अनुसार इसे मामूली प्रथा या कायदा मानना और भी भयानक है । काम पर जाने के कारणखेलने से मिलते बच्चों का शारीरिक व मानसिक विकास के अवसर से वे वंचित हो रहे हैं । दुनिया की हज़ारों सडकों से गुज़रते हुए बच्चे बहुत छोटे बच्चे काम पर जा रहे हैं । यह दृश्य ज़रूर ही खतरनाक है । गरीब बच्चे अपनी और अपने घर की तकलीफों के कारण बचपन की खुशियाँ छोडकर काम पर जाते होंगे । इनकी समस्याओं को खतम करने का उत्तरदायित्व समाज पर है । गैर कानूनी होने पर भी बालश्रम आज भी संसार के कई देशों में चालू है । इसके विरुद्ध आवाज़ उठाने का आह्वान है यह कविता ।

समाज की एक बडी समस्या को कविता के द्वारा प्रस्तुत करने में कवि को पूर्ण सफलता मिली है । कविता की भाषा अत्यंत सरल एवं हमें चिंतित करने की प्रेरणा देनेवाली है ।

2. 'क्या सारे मैदान, सारे बगीचे और घरों के आँगन खतम हो गए हैं एकाएक '– इन पंक्तियों से कवि क्या कहना चाहते हैं ?

खेलने की जगहों से बच्चे वंचित हैं । उन्हें ऐसी जगहों पर जाने का अवसर नहीं मिलता है । वे तो काम पर जा रहे हैं ।

3. 'भयानक है लेकिन इससे भी ज़्यादा यह / कि हैं सारी चीज़ें हस्बमामूल '- इस पंक्तियों से कवि क्या कहना चाहते हैं ?

काम पर जाने से बच्चे रंग-बिरंगी किताबें, खिलौने, हँसी-खेल की दुनिया, पढाई का संसार आदि से वंचित होते हैं । ऐसे उन्हें इस दुनिया में कुछ भी बचा नहीं । इसलिए कवि के मत में इन बातों को मामूली प्रथा या कायदा मानना इससे भी भयानक है ।

PART - 4 (पर दुनिया की हज़ारों सडकों से -------- काम पर जा रहे हैं ।)

1. यह कविता किस सामाजिक समस्या की चर्चा कर रही है?

बालश्रम

2. कवितांश का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के प्रमुख कवि श्री.राजेश जोशी की सुंदर कविता बच्चे काम पर जा रहे हैं से ली गई हैं । इसमें कवि बाल मज़दूरी पर तीखा प्रहार करते हैं ।

अंतिम पंक्तियों में कवि कहते हैं कि बालश्रम के प्रति हमारा दृष्टिकोण चाहे कुछ भी हो, यह अक सच्चाई है कि दुनिया भर के कई छोटे-छोटे बच्चे काम पर जा रहे हैं । भूख या गरीबी ही वह कारण है जो कुछ बच्चों को काम पर जाने केलिए विवश करता है । बचपन ज़िंदगी का वह समय है जब बच्चों को सारी परेशानियों और दुखों से बेखबर हो हँसना-खेलना चाहिए । लेकिन खिलौनों और रंग-बिरंगी किताबों की दुनिया कुछ बच्चों के भी नसीब में है । कवि हमारे समाज की इस असमानता पर दुखी है ।

समाज की एक बडी समस्या को कविता के द्वारा प्रस्तुत करने में कवि को पूर्ण सफलता मिली है । कविता की भाषा अत्यंत सरल एवं हमें चिंतित करने की प्रेरणा देनेवाली है ।

3. लेख - बालश्रम

आज बालश्रम दुनिया भर के सबसे भीषण समस्या है । 5 से 14 साल तक के बच्चों को अपने बचपन से ही लगातार काम करवाना बालश्रम कहलाता है । बचपन सभी बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है जो माता-पिता के प्यार और देख-रेख में सभी को मिलना चाहिए । यह अभिशाप बच्चों को अपने दोस्तों के साथ मिलकर खेलने, स्कूल में जाकर पढाई करने, किताबों की मनमोहक दुनिया में घूमने, पौष्टिक भोजन मिलने तथा प्रकृति की सुंदरता का आनंद लेने के अधिकार से वंचित कर देते हैं । माता-पिता अपने बच्चों को परिवार के प्रति बचपन से ही ज़िम्मेदार बनाना चाहते हैं । बालश्रम का मुख्य कारण गरीबी, आर्थिक कठिनाई, बेरोज़गारी, स्कूलों की कमी, माँ-बाप की निरक्षरता, शक्तिहीन कानून व्यवस्था, अनाथत्व, काम करने में विवश माता-पिता आदि हैं । इसकी वजह से बच्चे देश की शक्ति बनने के बदले देश की कमज़ोरी का कारण बनता है । देश के भविष्य उज्वल बनाने केलिए उन्हें अपने बच्चों को हर तरह से स्वस्थ बनाना चाहिए । बाल मज़दूरी भारत में बडा सामाजिक मुद्दा बनता जा रहा है, जिसे नियमित आधार पर हल करना चाहिए । राष्ट्र का कर्तव्य यह है कि वे बच्चों को अवश्य एवं निशुल्क शिक्षा की व्यवस्था करें । यह एक गंभीर सामाजिक कुरीति है तथा इसे जड से समाप्त करना चाहिए ।

4. पोस्टर (points) संदेश – बालश्रम के विरुद्ध

1. बालश्रम दुनिया की एक भीषण समस्या है...
   बच्चों को काम केलिए नहीं,स्कूल में भेज दें ।
2. बालश्रम रोको...
   बच्चों को पढने,खेलने और बढने दें ।
3. बालश्रम कानूनी अपराध है...
   बालश्रम करानेवालों को कठिन दंड दें ।
4. आज के बच्चे कल के नागरिक हैं...
   मिटाओ जड से बालश्रम,बचाइए भविष्य अपने देश की ।
5. जिस देश के बच्चों का कोई भविष्य नहीं...
   उस देश की अपनी कोई भविष्य नहीं ।
6. बालश्रम एक अभिशाप है...
   एकसाथ हम इस सामाजिक समस्या का उन्मूलन करें ।

विश्व बालश्रम विरुद्ध दिवस – जून 12

11. गुठली तो पराई है **PART - 1** (यूँ तो बडी बुआ गुठली को .... उसके पैरों के नीचे से ज़मीन खींच ली गई हो ।)

1. 'यूँ तो बड़ी बुआ गुठली को अच्छी लगती हैं पर उनसे बात करना उसे कुछ खास पसंद नहीं ।' क्यों ?
   बुआ सदा उपदेश देती रहती है । हर बात में मनाही करती रहती है । उनका कहना है कि गुठली पराई घर की अमानत है । इसलिए गुठली बुआ से बात करना पसंद नहीं करती थी ।
2. 'अरी बेवक़ूफ़ यह घर तो पराया है ।' बुआ गुठली से ऐसा क्यों कहती है ?
   सामाजिक रिवाज़ों के अनुसार घर में पुरुष की प्रधानता है । लडकी को अपना घर में कोई स्थान नहीं है । उसे पराए घर की अमानत समझती है । गुठली शादी के बाद ससुराल जाएगी । तब पति का घर उसका अपना घर बनेगा । इसलिए बुआ गुठली से ऐसा कहती है ।
3. 'लगा उसे जैसे उसके पैरों के नीचे से ज़मीन खींच ली गई हो ।'- गुठली ऐसा क्यों लगती है ?
   बुआ गुठली से कहती है कि गुठली का घर अपना नहीं पराया है । उस समय वह दुखी होकर अपनी माँ की ओर देखती है । लेकिन माँ बुआ की बातों से हामी भरती है । माँ को भी बुआ का साथ देते देखकर गुठली को लगा कि अपने पैरों के नीचे से ज़मीन खींच ली गई है ।

4. गुठली की डायरी (बुआ की नसीहतें)

तारीख : ……………………..

आज मुझे बहुत दुखदायक दिन था । ज़िंदगी में पहली बार एक लडकी होने पर निराशा का अनुभव होने लगती है । लडके जैसे भी चलें और जैसे भी बातचीत करें । लडकियों को कुछ भी करने की स्वतंत्रता नहीं । बुआ ने कहा कि मेरा घर अपना नहीं है, वह तो पराया है । पर इस घर में ही मैं पैदा हुई हूँ । फिर यह घर मेरेलिए क्यों पराया हुआ है ? बुआ के अनुसार लडकियाँ ससुराल को अपना घर मानें । मुझे सब बातें समझने की अकल नहीं आई है । मेरी प्रतीक्षा यह थी कि इस विषय पर माँ मेरी सहायता करती । किंतु वे भी बुआ का साथ देता देखकर मुझे बडा आघात हुआ है । मैं अपना दुख किससे कहूँ ? काश मैं भी एक लडका होता तो कितना अच्छा होता !

5. पटकथा (बुआ की नसीहतें)

स्थान - घर के अंदर ।

समय - शाम के साढे पाँच बजे ।

पात्र - गुठली और बुआ (गुठली 14 साल की लडकी, चुडीदार पहनी है। बुआ 50 साल की औरत, साडी पहनी है ।)

घटना का विवरण - गुठली अपनी मर्ज़ी से कुछ करने लगी तो बुआ हमेशा की तरह उसे डाँटते हुए नसीहतें देना शुरू करती है ।

संवाद -

बुआ - गुठली ज़रा इधर आओ ।
गुठली - बताइए ... क्या बात है बुआ ?
बुआ - यह क्या है बेटी ? तुम्हें ऐसा मत करना है, ऐसा पट-पट मत बोलना है, धम-धम मत चलना है ।
गुठली - बुआ, आप बार-बार मुझसे ऐसा क्यों कहती है ?
बुआ - अरे, तू एक लडकी है न ?
गुठली - क्या लडकी होने से कोई दोष है ?
बुआ - अरे छोरी, लोग नाम तो तेरी माँ को ही रखेंगे । कहेंगे कुछ सिखाया ही नहीं । ऐसा ही करोगी क्या अपने घर जाकर ?
गुठली - (क्रुद्ध होकर) आप क्या कह रही है ? अपना घर ? यही तो मेरा घर, जहाँ मैं पैदा हुई ।
बुआ - (हँसती हुई) अरी बेवकूफ यह घर तो पराया है । बाकी लडकियों की तरह तू भी किसी और की अमानत है । ससुराल ही तेरा असली घर होगा । मैं भी इसी घर में पैदा हुई थी, पर अब तेरे फूफ़ाजी का घर ही मेरा घर है । कुछ समझी ?
गुठली - मैं नहीं मानूँगी ।
बुआ - तुम भी बडे होकर अपने घर चली जाओगी ।
गुठली - यही है मेरा, मैं इसे छोडकर कहीं नहीं जाऊँगी ।
(गुठली रोती हुई वहाँ से भाग जाती है ।)

PART - 2 (उसे याद आया पिछले साल दीदी की शादी में, ... गुठली माँ के प्यार सो मान गई ।)

1. 'पर ताऊजी उसमें भइया के छोटे–से बेटे का भी नाम है जो अभी बोल भी नहीं सकता तो मेरा ... ।' यहाँ कौन–सी सामाजिक अव्यवस्था की झलक मिलती है ?
   यहाँ परिवार की लडका–लडकी के भेदभाव की ओर संकेत है । लडकी को पराए घर की संपत्ति मानी जाती है । उसके साथ घरवाले उपेक्षा का व्यवहार करते हैं । परिवार में लडकों को जो स्थान मिलता है वह लडकियों को नहीं मिलता ।
2. 'भूला नहीं है रे ... अपने घर की छोरियों के नाम कार्ड पर नहीं छपते ।' ताऊजी इस विचार पर आपकी राय क्या है ?
   गुठली के परिवार में शादी के कार्ड में वधु को छोडकर अन्य लडकियों के नाम छपवाने की परंपरा नहीं थी । पर सारे लडकों का नाम छपवाते थे । इसलिए गुठली का नाम नहीं छपवाया । ऐसा भेदभाव रखना कभी ठीक नहीं । मेरी राय में लडकी और लडका बराबर है । बुद्धि और क्षमता में दोनों समान है, इसलिए लडके को जो प्यार, सुविधाएँ और हक दिया जाता है, वे सब लडकियों को भी मिलना है । लडके-लडकियों के बीच भेदभाव रखना एक स्वस्थ समाज केलिए लायक नहीं है ।
3. माँ ने गुठली से अपना प्यार कैसे प्रकट किया ?
   दीदी की शादी के कार्ड में गुठली का नाम छपा नहीं था । इससे दुखी होकर गुठली शिकायत करने और रोने लगी । तब उसका नाम कलम से लिख जोडकर माँ ने अपना प्यार प्रकट किया ।
4. गुठली का मुँह उतर गया । क्यों ?
   अपनी बहन की शादी के कार्ड में भइया के छोटे से बच्चे का नाम तक छपा था । लेकिन गुठली का नाम नहीं था । यह देखकर गुठली का मुँह उतर गया ।

5. गुठली की डायरी (शादी के कार्ड पर गुठली का नाम नहीं छपा)

तारीख : ....

दीदी की शादी की तैयारियाँ हो रही थी । घर मेहमानों से भरा था । हम सब बडी खुशी में थी । इसी बीच शादी के कार्ड छपके आए । बडी उत्सुकता के साथ मैंने कार्ड खोला । दुख सह न पाई । मेरा नाम कार्ड में न था । भैया के छोटे बच्चे का नाम भी छपा था जो अभी बोल भी नहीं सकता । मैंने सोचा, भैया भूल गया होगा । मैंने बहुत दुखी होकर ताऊजी से शिकायत की । उनका विचार है कि घर की छोरियों के नाम कार्ड पर नहीं छपते । मैं रोने लगी तो बुआ ने डाँटते हुए कहा, शादी के घर में मनहूसियत मत फैलाना । मैं मानने को तैयार नहीं थी । मुझे दुखी देखकर आखिर माँ ने अपने हाथ से कार्ड में मेरा नाम लिख दिया । छपाई जैसा नहीं तो भी माँ के प्यार से मैं मान गई । लडकी के साथ अपने घर में भी इतना विवेचन क्यों ? इस रूढी के खिलाफ ज़रूर आवाज़ उठाना है । आज का यह दिन मैं कभी नहीं भूलूँगी ।

6. पटकथा (शादी के कार्ड पर गुठली का नाम नहीं छपा)

स्थान - घर की बैठक ।

समय - शाम के साढे पाँच बजे ।

पात्र - गुठली 14 साल की लडकी, चुडीदार पहनी है ।
ताऊजी 50 साल के आदमी, धोती और कुर्ता पहने है ।

घटना का विवरण - ताऊजी बैठक की कुर्सी पर बैठे पान खा रहे हैं । गुठली शादी के कार्ड लेकर आती है । उसके चेहरे पर निराशा है ।

संवाद -

गुठली - ताऊजी, क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकती हूँ ?

ताऊजी – क्या बात है बेटी ? जल्दी बताओ ।

गुठली - देखिए ताऊजी, भइया मेरा नाम कार्ड पर छपवाना भूल गया ।

ताऊजी – (हँसते हुए) भूला नहीं है बेटी ।

गुठली - फिर ?

ताऊजी – अपने घर की छोरियों का नाम कार्ड पर नहीं छपते ।

गुठली - पर ताऊजी, उसमें भइया के छोटे बेटे का नाम भी है, जो अभी बोल भी नहीं सकता, तो मेरा ...

ताऊजी – तो क्या हुआ ? तेरा नाम तो तेरे अपने कार्ड में छपेगा, यहाँ नहीं ।

गुठली - लेकिन ताऊजी ... दीदी के कार्ड में सिर्फ मेरा नाम नहीं है । यह तो बिलकुल अन्याय है ।

ताऊजी – अरे छोरी ... मुझे गुस्सा मत करना । अब चल भाग यहाँ से ।

(गुठली रोती हुई वहाँ से चलने लगती है ।)

PART – 3 (पर अब तो हद हो गई । .... गुठली टिफिन-बैग उठाकर स्कूल के लिए चल दी ।)

1. सामाजिक असमानता के खिलाफ गुठली अपने ढंग से आवाज़ उठाती है। असमानताओं के विरुद्ध आप क्या–क्या कर सकते हैं ?

सामाजिक असमानताओं के विरुद्ध आवाज़ उठाना हरेक नागरिक का कर्तव्य है । अपने माँ–बाप एवं रिश्तेदारों को यह समझाना चाहिए कि लडका–लडकी एक समान है । सामाजिक असमानता का मुख्य कारण शिक्षा का अभाव है । सभी को शिक्षा मिलने से इस समस्या का एक हद तक हल हो जाता है ।

2. वार्तालाप – गुठली और सहेली के बीच (घर के अनुभव)

गुठली – आज मैं बहुत निराश हूँ यार ।

सहेली – क्या हुआ गुठली, क्यों उदास हो ?

गुठली – बताओ यार, क्या स्त्री होना कोई पाप है ?

सहेली – मुझे कुछ भी समझ में नहीं आया । बुआ की नसीहतें आज भी हुआ क्या ?

गुठली – हाँ । उसने कहा मेरेलिए अपना घर पराया है । मैं किसी और की अमानत है । मुझे लगता है माँ भी बुआ के पक्ष में है ।

सहेली – ऐसा कहने को क्या हुआ ?

गुठली - आज माँ ने कहा, बुआ का कहना सही है। कल की बातों को लेकर आज परेशान न होना। बचपन के दिन फिर लौटके नहीं आनेवाले हैं, इसे जी भरके जी लें।

सहेली – गुठली, तुम निराश मत बनो, उन्हें कुछ सबक सिखाओ ।

गुठली – मैं भी ऐसा सोचती हूँ ।

3. टिप्पणी - गुठली की चरित्रगत विशेषताओं पर

कनक शशि की गुठली तो पराई है कहानी का मुख्य पात्र है गुठली नामक की लडकी । वह एक संयुक्त परिवार का अंग है । घर में भाई को मिलती स्वतंत्रता भी गुठली को नहीं मिलती है । घर में उसको स्वतंत्र रूप से चलने या बातें करने का अधिकार नहीं था । घरवालों के अनुसार वह पराए घर की अमानत है । दीदी की शादी के कार्ड पर गुठली का नाम नहीं छपवाने से वह इसके खिलाफ आवाज़ उठाती है । अंत में वह घर में हो रहे लडका-लडकी भेदभाव पर सबको सबक सिखाने का निश्चय करती है । सभी से ऐसा कहती है कि वह एक मेहमान है और मेहमानों से काम करवाना अच्छी बात नहीं है । गुठली सामाजिक असमानता की ओर अपने ढंग से आवाज़ उठानेवाली आज के ज़माने की साहसी लडकियों की प्रतिनिधि है ।

4. गुठली का पत्र (अपनी हालत पर सहेली के नाम)

स्थान : ……………….

तारीख : ……………….

प्रिय सहेली,

तुम कैसी हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए यह पत्र भेज रही हूँ । बुआ हमेशा उपदेश देती रहती है । वे कहती हैं कि लडकी तो पराए घर की अमानत है । ससुराल ही लडकियों का अपना घर है । घर में स्वतंत्रता से कुछ करने, चलने या बातचीत करने का भी हक लडकियों को नहीं । दीदी की शादी के कार्ड छपके आई तो सिर्फ मेरा नाम उसमें नहीं था । भइया के छोटे बेटे का भी नाम उसमें था । ताऊजी का कहना है कि घर की लडकियों का नाम कार्ड पर नहीं छपते । ये लोग ऐसा क्यों कहते हैं ? मेरी समझ में नहीं आती। क्या लडकी होना कोई बुरी बात है ? क्या लडकियों केलिए हमारे संविधान में अलग नियम है ?

आगे मैं ऐसी व्यवहार सह नहीं सकती । लडकी-लडके से कभी कम नहीं है । इस रूढी के विरुद्ध मैं ज़रूर आवाज़ उठाऊँगी । मेरी प्रतीक्षा है कि तुम ज़रूर कुछ बताएगी । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारी सहेली
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

5. टिप्पणी – लडकियों को समानता का अधिकार है

भारतीय संविधान के अनुसार लडके-लडकियों को समानता का अधिकार है । लेकिन लडकियों को अकसर भेदभाव सहना पडता है । यह आज के समाज की बडी समस्या है । लडकी को जन्म से लेकर अंत तक घर का काम करना पडता है । सभी कहते हैं कि ससुराल ही लडकियों का असली घर है । इसलिए उसे अपने घर में अन्य होने का अनुभव होता है । समाज में हो या परिवार में हो लडकों के समान लडकियों को उचित स्थान नहीं मिलता है । समाज में भी यही भेदभाव हम देख सकते हैं । उसे स्वतंत्र रूप से चलने का अधिकार भी नहीं है । उन्हें लडकों के जैसे पढाई की सुविधाएँ नहीं मिलती हैं । आज नारी समाज के सभी क्षेत्रों में कर्मरत हैं । उसे समाज से अलग रखना उचित नहीं है । गर्भ में ही लडकियों की हत्या करने का निर्मम व्यवहार भी कभी-कभी चलता है । यानी वे लडकियों को जन्म देना भी नहीं चाहते । लजकियों के प्रति हीन भाव रखना ठीक नहीं है । लडका-लडकी एक जैसा है । लडकियों को समानता का अधिकार मिलना चाहिए ।

6. पोस्टर (points) संदेश – लडका - लडकी भेदभाव

1.लडकी-लडके को समान मानो…
दोनों समता से रहनेवाला देश रचो ।

2. लडकियाँ अनमोल संपत्ति हैं…
तोड दो पुरानी विश्वास, नए सोच अपनाओ ।

3. हर बच्चे का अपना-अपना हक है…
सुरक्षित रहने का और शिक्षा पाने का ।

4. कम उम्र में लडकियों की शादी मत करवाओ, उन्हें अपशकुन मत मानो…
लडकियों को भी अपने पैरों पर खडा होने दो ।

5. लडकी-लडके के बीच भेदभाव न करें…
वह तो पराया धन नहीं, अपना ही है ।

6. देश की उन्नति में लडकियों का भी हाथ है…
वे सिर्फ घर के काम-काज निपटाने को नहीं ।

7. संविधान में दोनों को समान अधिकार है…
देश से इस असमानता मिटाना हमारा कर्तव्य ।